NEHRU BAL PUSTAKALAYA

हमारा नाटक



नेहरू बाल पुस्तकालय

हमारा नाटक

संपादक

डा० हरिकृष्ण देवसरे

चित्रकार

रीनी कौर



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-0946-3

पहला संस्करण : 1984
दसवीं आवृत्ति : 2000 (*शक* 1922)

रु. 13.00
Hamara Natak *(Hindi)*
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

अनुक्रम



पात्र

सुनील	:	आयु 12 वर्ष
सुभाष	:	आयु 11 वर्ष
विमल	:	आयु 10 वर्ष
सुमन	:	आयु 10 वर्ष
पिता	:	सुनील का पिता
देवदत्त	:	एक युवा व्यक्ति
रामदास	:	एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति
थानेदार	:	पुलिस की वर्दी में
तीन सिपाही (किशन, दिलीप और रामसिंह)	:	सादे कपड़ों में हैं लेकिन मूँछों और रौबदाब से सिपाही लगते हैं।
माँ	:	सुनील की माँ
हरिचंद	:	विमल के पिता

हमारा नाटक

विष्णु प्रभाकर

मंच पर निम्न मध्यम वर्ग की बस्ती के एक मकान का बरामदा। प्रकाश होने पर वहाँ चार-पाँच मूढ़े-मूढ़ियाँ पड़े हैं। एक आध खाट भी है। तुरंत चार बच्चे लपकते हुए वहाँ आते हैं और मूढ़े-मूढ़ियों को ठीक करके उन पर बैठ जाते हैं। तीन लड़के, एक लड़की है। आयु 10 से 12 वर्ष है। वेशभूषा साधारण पर वैसे चुस्त हैं। इनमें जो सबसे बड़ा है वह सुनील है। वह बीच में बैठता है और बोलना शुरू करता है। शेष तीनों ध्यान से सुनते हैं।

सुनील : कल हमारे स्कूल में एक मंत्री जी आये थे। वह कह रहे थे...

सुमन : **(बड़ों की तरह)** क्या कह रहे थे?

सुभाष : बीच में मत बोलो, सुनने दे न।

सुनील : हाँ, पहले मेरी बात सुनो। वह कह रहे थे कि बच्चों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। जैसे एक बात तो जानते ही हो कि रेल में तीन वर्ष तक के बच्चों का टिकट नहीं लगता।

सुमन	**:**	पापा कह रहे थे बस में तो, कहीं-कहीं दस वर्ष तक के बच्चों से भी टिकट नहीं लिया जायेगा।
सुभाष	**:**	मेरी राय में तो 12 वर्ष की उम्र तक किसी से कहीं भी टिकट नहीं माँगना चाहिए। फीस भी नहीं लेनी चाहिए। उन्हें किताबें, कापियाँ और दोपहर का खाना भी देना चाहिए।
विमल	**:**	**(जोर से हँसकर)** तब तो बड़ा मजा आ जाए।
सुभाष	**:**	हमें उन फिल्मों के टिकट भी मिलने चाहिए, जो बड़ों के लिए होती हैं।
सुमन	**:**	और बच्चों को खूब सारी चाकलेट और पॉपिन्स भी मिलनी चाहिए।
विमल	**:**	मेरे पिताजी रोज़ देर से घर आते हैं। मैं अब उनसे पूछूँगा कि वह कहाँ रहते हैं।



सुनील : **(उछलकर)** यह हुई न बात। बहुत से बच्चों के डेडी लाल बत्ती पर भी स्कूटर निकाल कर ले जाते हैं। पीछे बैठे बच्चों को उन्हें रोकना चाहिए। नहीं तो पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए।

विमल : **(खुश होकर)** शाबाश भैया! मैं भी ऐसा ही सोच रहा था।

सुभाष : पर हमारे घर तो साईकिल ही है।

सुनील : साइकिल वाले तो और भी गलती करते हैं। उनकी साइकिलों में न घंटी होती है न रोशनी। तीर की तरह सर्र से निकल जाते हैं।

विमल : मेरे भैया ऐसे ही करते हैं। उन्हें कोई पकड़ता ही नहीं। एक बार तो उन्होंने एक बच्चे को गिरा दिया और रुके तक नहीं।



सुनील : बुरी बात है। बहुत बुरी बात है। हमें ऐसी ही बुरी बाता को रोकना चाहिए। सबको बता देना चाहिए कि बच्चे बुद्धू नहीं होते। हमारे प्रिंसिपल साहब यही कहते थे।

तभी मोटर का हार्न बज उठता है। बच्चे चौंकते हैं। दूसरे क्षण विमल खिल उठता है।

विमल : अहा जी, अहा जी, जरूर भानु अंकल कार लाये हैं। **(भाग जाता है।)**

सुमन : भानु अंकल कार कहाँ से ले आते हैं?

सुभाष : पापा कहते थे वह कहीं ड्राइवर हैं।

सुनील : ड्राइवर हैं, किसके यहाँ? वह तो एक मोटर पार्ट वाली फर्म के पार्ट बेचते हैं। तो उसी फर्म की कार होगी।

सुनील : हाँ, हो सकता है पर.... **(एकदम चुप हो जाता है।)**

सुमन : पर क्या सुनील भैया?

सुनील : अभी नहीं, कल बताऊँगा।

सुभाष : मैं तो जाकर देखता हूं। भानु अंकल खुश हुए तो घूमने चलेंगे।

सुनील : मैं नहीं जाऊँगा।

सुमन मैं भी नहीं जाऊँगी।

तभी विमल भागा हुआ आता है।

विमल : सुनील भैया, कार तो है पर भानु अंकल चले गये।

सुनील : चले गये! अकेले!

विमल : नहीं भैया, उनके साथ दो आदमी थे। उनमें से एक तो बड़ा डरावना था। मैं तो डर गया।

सुनील : क्या वह डाकू था जो डर गये?

विमल : पता नहीं। तीनों के हाथों में छोटे-छोटे सूटकेस भी थे।

सुमन : वे गये किधर?

विमल : खेतों से परे बाग की तरफ जा रहे थे।

सुनील : सुभाष कहाँ है विमल?

विमल : वह सीधे भानु अंकल के पास गये पर उन्होंने डाँट दिया। शायद घर चले गए।

सुनील : तू ढूँढ़ कर ला। हम यहीं हैं।

विमल : अभी लाता हूं। **(दौड़ जाता है।)**

सुमन : सुनील भैया, क्या बात है, नाटक नहीं करेंगे?

सुनील : क्यों नहीं करेंगे? ऐसा करेंगे कि हमारे बड़े भी याद रखेंगे। कुछ सीखेंगे हमसे।

सुमन : बताता हूँ, मेरे पास आ।

सुमन पास आती है। सुनील कान में कुछ कहता है। तभी सुभाष और विमल भागे हुए आते हैं। सभी सुनील की बातें सुनने की कोशिश करते हैं और बड़ों की तरह गरदन हिलाते हैं। सुमन मुस्कराती हुई भाग जाती है। तभी सुभाष बोल उठता है।

सुभाष : भैया, एक बात सुनो।

वह सुनील के कान में फुसफुसाता है।

सुनील : हूँ, मैं समझ गया। अच्छा, अब कल सवेरे यहीं मिलेंगे। हाँ, लेकिन रात की बात ध्यान में रखना।

विमल : मेरे ध्यान में है भैया, पापा ने रोका तब भी वहाँ जाऊँगा।



सुभाष : तेरे पापा मुझे बहुत रोकते हैं।

विमल : लेकिन अब मैं नहीं रुकूँगा।

सुभाष : वाह रे बहादुर सिपाही! यह हुई बात (**दोनों हँसते हैं**) पापा भी क्या याद करेंगे।

एकाएक जोर का धमाका-सा होता है। तीनों चौंक कर उधर भागते हैं।

सुनील : वह... वह देखो उस पेड़ के पास कोई है।

सुभाष : एक-दो-तीन। भैया, तीन आदमी हैं। देखूँ जाकर?

सुनील : न, न अभी नहीं जाना। अभी तुम वैसा ही करो जैसा मैंने बताया है।

तीनों जाते हैं बीच-बीच में उधर देख लेते हैं। अंधकार उतरते-उतरते गहरा होता है। जब फिर प्रकाश होता है तो वही स्थान है, पर मूढ़े पर सुनील के पिता बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। कई व्यक्ति उत्तेजित होकर सुन रहे हैं पर वे बोलते नहीं, इशारों से ही भाव प्रकट करते हैं।

देवदत्त : (**उत्तेजित होकर पढ़ रहा है**) कल शाम सात बजे, सात डाकू, सात पिस्तौल के बल पर, नगर के भरे बाजार में बिना किसी रक्तपात के 27 लाख 27 हजार रुपये लूट ले गये। मुश्किल से पंद्रह मिनट लगे उन्हें। वे एक हरे रंग की कार में आये थे, बैंक के सात कर्मचारी हिसाब कर रहे थे। सब दरवाजे खुले थे। डाकुओं ने कर्मचारियों को रस्सियों से बाँध दिया और मुँह पर टेप चिपका दिये। उन्होंने खजाँची से चाबी ली, सारे धन को थैलों में भरा और कार में बैठ कर चंपत हो गये। बैंक

दूसरी मंजिल पर है। पुलिस 20 मिनट में मौके पर पहुँच गयी। उसे विश्वास है कि इस डकैती में बैंक के कर्मचारी शामिल हैं।

सुनते-सुनते, सब डरे-डरे, ठगे से एक-दूसरे को देखते हैं। वे इशारों से भाव प्रकट करते हैं या फ्रीज हो जाते हैं। चारों बच्चे भी उनमें हैं। एक-दूसरे पर अर्थभरी दृष्टि डालते हैं। धीरे-धीरे सब लोग चले जाते हैं पर रामदास नाम का एक बूढ़ा रह जाता है।

रामदास : एक बात कहूं, देवदत्त?

देवदत्त : क्या बात काका? कहो।

रामदास : ठीक है, पर उस दिन उसने बच्चों को डाँट दिया था। कहीं....

देवदत्त **(हँसता है)** तुम्हें शक है। पर देखो अब कहा सो कहा, फिर ऐसी बात जबान पर मत लाना। पुलिस के कान में भनक पड़ गयी तो बस्ती की खैर नहीं। मार-मार कर लंगूर बना देगी हम सबको।

रामदास : मैंने तो बेटा, एक बात कही थी। आप मना करते हैं तो मुझे क्या पागल कुत्ते ने काटा है कि कहता फिरूँ।

रामदास चला जाता है। देवदत्त भी अंदर जाते हैं। अंधेरा गहरा होता है। दो क्षण बाद जब फिर प्रकाश होता है तो विमल को छोड़कर बाकी तीनों बच्चे पहले की तरह मूढ़ों पर बैठे हैं। वे बड़ी उत्सुकता से किसी की राह देख रहे हैं।

सुनील : क्यों सुमन, तुमने ठीक-ठीक पता बताया था न?

सुमन : हाँ भैया, मैं खुद थाने गयी थी।

सुभाष : तू डरी नहीं?

सुमन : डरती क्यों? बाबा रामदास मेरे साथ थे।

सुनील : विमल कहाँ है? वह अभी नहीं आया?

सुभाष : उनकी माँ कहती थी कि कल किसी बात पर उसके पापा ने उसे डाँट दिया था। तभी से उसका मुँह सूजा हुआ है। सो आज पापा उसे शहर ले गये हैं।

तभी थानेदार और तीन सिपाही सादी वर्दी में वहां आते हैं।

थानेदार : तुम में से सुनील कौन है?

सुनील : मैं हूँ, सर।

थानेदार : और तुम सुमन हो और तुम सुभाष?

सुभाष : आप तो बहुत जल्दी पहचान गये।

थानेदार : अरे, हम जादूगर हैं बेटे।

सब हँसते हैं।

थानेदार : तो सुनील, क्या तुम हमें वह स्थान दिखा सकते हो जहाँ तुमने उन तीनों को जमीन खोदते देखा था?

सुनील : जी, अभी चलिए।

थानेदार : **(साथियों से)** दिलीप और रामसिंह, तुम मेरे साथ चलो। और किशन तुम यहाँ बच्चों के साथ बैठो।

किशन : जो आज्ञा, सर।

सुनील थानेदार के साथ बैठ जाता है। दोनों सिपाही भी। किशन वहीं बैठ जाता है।

किशन : क्यों बेटा, तुम वह कार देखो तो पहचान लोगे?

सुभाष : मुझे तो उसका नंबर भी याद है। तीन-तीन पाँच और उसका रंग हरा था।

किशन : हाँ, जो कार चोरी गयी है उसका नंबर यही है पर जो हमें मिली है उसका नंबर यह नहीं है। हाँ, चला कौन रहा था?

सुभाष : वह तो हमने नहीं देखा। पर भानु अंकल तो कई बार कार लेकर आते हैं। वह खुद चलाते हैं।

सुमन : विमल कहता था कि बाकी के दो आदमियों में एक बड़ा डरावना था.... **(तभी अंदर से सुनील की माँ आती है।)**

माँ : सुनील! बेटा सुनील **(देखकर)** सुमन बेटी, सुनील कहाँ है? और ये कौन हैं?

किशन : मैं शहर से आया हूं। देवदत्त जी से मिलना है।

माँ : वे तो थोड़ी देर में आयेंगे पर सुनील कहाँ है?

किशन : अभी आ जाता है। मेरे साथी को बाग दिखाने ले गया है।

तभी सीटी गूंजती है, गूंजती रहती है, दूसरी ओर से भी गूँजती है। इधर-उधर से स्त्री-पुरुष झाँकते हैं। सात-आठ बावर्दी पुलिस के सिपाही तेजी से वहाँ आते हैं और उधर भागते हैं जिधर थानेदार गया था। कई स्त्री-पुरुष घबराये हुए वहाँ आ जाते हैं लेकिन सुमन और सुभाष मुस्कराते हैं और सबको इशारे से शांत करते हैं। पर माँ बड़ी बैचेन है।

माँ : यह सब क्या है? मेरा सुनील कहाँ है? वह किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गया?

किशन : बहन जी, आप क्यों घबराती हैं? आपका बेटा तो बहुत बहादुर है।

माँ : लेकिन बात क्या है भैया? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

किशन : अभी सब समझ में आ जायेगा। सुनील, सुभाष और सुमन तीनों ने मिल कर बैंक की डकैती का पर्दाफाश किया है।

माँ : क्या... बैंक डकैती... जिसके बारे में अखबार में छपा था?

सभी स्त्री-पुरुष हैरान-परेशान देखते रह जाते हैं, जैसे फ्रीज हो गये हों। तभी थानेदार, सब सिपाही व सुनील वहाँ आते हैं। उनके पास बड़ा सूटकेस है, डिब्बे हैं। सुनील की माँ लपककर सुनील को कौली में भर लेती है।

माँ : तू ठीक है न बेटे?

सुनील : बिल्कुल ठीक हूँ माँ, परसों बैंक में जो डाका पड़ा था उसमें भानु अंकल भी शामिल थे। देखो तो कितने रुपये हैं।

तब तक सिपाहियों ने नोटों से भरे सूटकेस और डिब्बे वहाँ रख दिये हैं।

माँ : **(पागल सी)** बाप रे.... इत्ते रुपये **(विह्वल)** थानेदार साहब! अजी थानेदार मैने कभी इतने रुपये नहीं देखे। एक बार छूकर देख लूँ इन्हें।

थानेदार : **(हैरान-सा)** देख लो बहन।

माँ डरते-सहमते रुपयों को छूती है। भाव-विह्वल होती है जैसे उन्हें दुलारती हो। बार-बार ऐसे ही करती है। बाकी सब स्तब्ध देखते हैं।

विमल : साहब, मेरे पापा डिब्बा लेकर आ रहे हैं। भानु अंकल छिपाने को रख गये थे।

तभी विमल के पापा पास आते हैं। हाथ में सीमेंट से पुता डिब्बा है।

हरिचंद : थानेदार साहब। परसों भानु ने यह डिब्बा मुझे दिया था कि दो दिन बाद आकर वह डिब्बा ले जायेगा। देखिए, इसमें भी नोट तो नहीं हैं?

थानेदार : **(डिब्बा लेकर)** बिल्कुल वैसा ही है। किशन खोलो तो।

किशन खोलता है और नोटों के बंडल निकालता है।

किशन : एक, दो, तीन, चार, पाँच, सौ-सौ के पाँच बंडल यानी पचास हजार रुपये।

हरिचंद : बाप रे! चोरी के रुपये रख गया मेरे पास। साहब, इसने मेरी जान खा रखी थी कि अभी लेकर चलो, अभी लेकर चलो। **(हाथ जोड़कर)** भगवान की कृपा हुई जो मैंने इसकी बात मान ली। मैं बच गया, भगवान ऐसा बेटा सबको दे।

थानेदार : शाबाश विमल! तुमने तो अपने पिताजी को राह

दिखाई। शाबाश! तो अब शुक्रिया सुनील, शुक्रिया सुभाष, शुक्रिया सुमन बेटी और तुम्हारा तो बार-बार शुक्रिया विमल। एक दिन यहीं आकर हम तुम सबका सम्मान करेंगे। तब तक अलविदा दोस्तो। **(जाते हैं।)**

माँ : आज समझ में आया बच्चों को भगवान का रूप क्यों कहा जाता है।

चारों को कौली में भरकर चूमती है।

हरिचंद : सच बहन, मैं तो इसी के कारण बचा। **(हाथ जोड़कर प्रणाम करता है।)**

तेजी से देवदत्त का प्रवेश

देवदत्त : मैं सब सुन चुका हूँ। सब सुन चुका हूँ। कल यहाँ बड़ा जलसा होगा और उसमें इन चारों को कंधों पर बैठाकर हम नाचेंगें।

हरिचंद : वह तो हम अभी भी कर सकते हैं।

सब दौड़ कर चारों को उठा लेते हैं और नाचते हैं और विमल हँसकर कहता है...

सुमन : हमारा नाटक जिंदाबाद।

फिर तो सब चिल्लाते और नाचते हैं।

पात्र

राकेश के पिता	:	एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति
राकेश	:	आयु 12 वर्ष
प्रदीप	:	आयु 11 वर्ष
पप्पू	:	आयु 10 वर्ष
बिंदु	:	आयु 12 वर्ष
अनिल	:	आयु 10 वर्ष

नाटक से पहले

मनोहर वर्मा

छोटा सा क़मरा। जिसका द्वार दर्शकों के सामने है। कमरे में अल्मारी, छोटी-बड़ी टेबिलें, किताबों का शेल्फ लगे हैं। किताबें व अखबार इधर-उधर बिखरे हैं। टोपी, कपड़े, छतरी, छड़ी, दर्पण वगैरह दीवार पर टँगे हैं। एक ओर पलंग भी है। चादर तकिये बेतरतीब पड़े हैं। दोपहरी का समय है। सैटिंग इस तरह का है कि बीच में काफी स्थान खुला है, ताकि पात्र आसानी से अभिनय कर सकें और दर्शकों को साफ दिखता रहे। पर्दा उंठने पर—राकेश पलंग पर बैठा दिखाई देता है। हाथ में एक कापी लिए कुछ पढ़ रहा है। प्रदीप, बिंदू और पप्पू मेकअप करने और पोशाक पहनने में लगे हुए हैं।

राकेश के पिता : **(नेपथ्य से)** राकेश... ओ... **राकेश...। (आवाज़ कुछ समीप आती-सी लगती है) कहाँ चला** गया कम्बख्त।

मंच पर भगदड़-सी मच जाती है। सब अपना-अपना मेकअप और ड्रेस वापस उतारने लगते हैं। कपड़ों से चेहरा पोंछ लेने से चेहरे पर लगा काजल व पाउडर सब फैल जाते हैं।



राकेश : **(घबराते हुए)** जी...। **(द्वार के पास दौड़ जाता है।)**

पिता **नेपथ्य से डाँटने के स्वर में** क्या हो रहा है?

राकेश : जी, हाथ से सब साथियों को चुप रहने व शांति रखने का

: इशारा करता है **(नाटक की....)**।

पिता : **(नेपथ्य से)** मेरा ही कमरा फालतू मिला तुम्हें कमरे को ठीक से जमाओ। तुम्हारे मामाजी शतरंज खेलने आ रहे हैं अभी।

इस बीच सब बच्चे उसी स्थिति में खड़े रहते हैं, डरे-डरे से। प्रदीप के सिर पर बंधा लाल साफा आधा बिखरा रहता है। विद के चेहरे का मेकअप फैला रहता है। पप्पू हाफ पेंट और कमीज पर एक ढीला-सा ब्लाउज पहने ज्यों का त्यों खड़ा रह जाता है। तीनों बिना हिले-डुले अजीब-सी, हास्यास्पद आकृतियाँ बनाये खड़े रह जाते हैं।

राकेश : जी... अच्छा। **दरवाजे से लौटते हुए** लो भई, हो गयी अपनी तो रिहर्सल। अब यहां से हाथी, घोड़े और प्यादे चलेंगे।

धम्म से पलंग पर बैठ जाता है। सब राकेश के करीब पहुंच जाते हैं।

प्रदीप : फिर, अब क्या करें राकेश?

पप्पू : करें क्या! पहले एक राकेट बनायें और फिर उसमें बैठकर धरती और आसमान के बीच कहीं रिहर्सल करें।

प्रदीप : अच्छा-अच्छा, आप अपनी अक्ल के गुब्बारे की हवा इधर मत निकालिये।

पप्पू : ओह, मुझे पता नहीं था कि पहले आप निकाल रहे हैं। हम आपके बाद सही।

बिंदु : अमाँ, अपने मुँह में चल रही फिरकनी को रोको तो कुछ सोचें।

पप्पू अपनी जीभ बाहर निकाल कर पकड़ लेता है।

बिंदु : प्रदीप, तुम्हारे यहाँ चलें फिर।

प्रदीप : ना बाबा, ना! राकेश के पिताजी ने तो कुछ भी नहीं कहा। वहाँ मेरी दादी दिन भर आँखें भींचे माला जपती रहती है। **(आँखें बंद कर पोपला सा मुँह चलाते, माला जपती दादी की नकल करता है।)** बस शोर हुआ नहीं कि वह लकड़ी टेकती आ पहुँचेगी! तुम्हारे यहाँ क्यों न चले बिंदू?

बिंदु : मेरे यहाँ? मेरी दादी के दो दाँत की तरह कुल दो ही तो कमरे हैं। एक में खाना बनता है और दूसरे में....

पप्पू : **(बीच में ही)** सब खाते हैं।

बिंदु : फिर चल पड़ी तुम्हारी फिरकनी?

पप्पू फिर जीभ निकालकर पकड़ लेता है।

राकेश : कहीं न कहीं तो करना ही पड़ेगा। राकेट में करें या चंद्रलोक में। नहीं तो मुहल्ले में नाटक से नाक तो कटेगी ही।

बिंदु : पप्पू, तुम्हारे यहाँ इंतजाम हो सके तो क्या बुराई है?

पप्पू : कोई बुराई नहीं है, आराम से कर सकते हैं। पर एक

बात सोच लो, मेरे सारे भाई-बहन और बिल्डिंग के बच्चे इकट्ठे हो गये तो अपनी रिहर्सल फाइनल नाटक में बदल जायेगी।

बिंदु : तो फिर क्या किया जाये राकेश भाई। समस्या की पूँछ तो लंबी होती जा रही है।

प्रदीप : अरे भाई, करना क्या है? रिहर्सल! वही करो। अभी तो राकेश के पिताजी के आने में देर है। मैं समझता हूँ, तब तक रिहर्सल कर ली जाये। कम से कम एक रिहर्सल तो हो ही जायेगी। क्यों राकेश?

राकेश : मगर....।

प्रदीप : भई अगर मगर नहीं। जल्दी से एक रिहर्सल कर डालो। उसके बाद इस समस्या पर सोचेंगे।

पप्पू : हाँ राकेश भाई, हो ही जाये एक रिहर्सल तो....।

राकेश : अच्छा...। (**दरवाजे की ओर देखता है**) ऐसा करो बिंदु, तुम वहाँ दरवाजे के पास खड़े हो जाओ। पिताजी के आने की आहट होते ही इशारा कर देना।

बिंदु दरवाजे पर जाकर खड़ा हो जाता है। राकेश कुर्सी पर बैठ जाता है। उसके सामने ही प्रदीप और पप्पू आ खड़े होते हैं। राकेश के हाथ में कापी-पेंसिल है। कापी में से कुछ पढ़कर....)

राकेश : चलो, जल्दी से एक रिहर्सल ही करा लें। प्रदीप (**राकेश खड़ा हो जाता है**) तुम्हारे मूँछें होनी जरूरी है।

प्रदीप : मूँछें? (**मूँछों की जगह हाथ फेरते हुए, आश्चर्य से**) मैं तो आठ बरस का ही हूँ। मेरे अभी से मूँछें....।

राकेश : अरे भई, तुम आठ वर्ष के हुए तो क्या हुआ, पार्ट तो तुम पच्चीस बरस के आदमी का करोगे न? लो। (**जेब से निकाल कर देते हुए**) अभी तो इस भुट्टे की मूँछ बना लो।

प्रदीप हँसते हुए उन भुट्टे के बालों को नचाता हुआ दीवार पर लगे शीशे को उतार कर टेबल पर रख लेता है और पास ही रखी गोंददानी के ब्रुश से होंठो के ऊपर गोंद लगाकर भुट्टे की पूँछ के बाल चिपका लेता है। राकेश कापी में से कुछ पढ़ता रहता है। पप्पू दबे पाँव कुछ अजीब-सी चाल में चलता हुआ बिंदू के करीब जाकर धीरे से खोपड़ी आगे निकालकर उधर देखता है।

राकेश : पप्पू, तुम्हारे पार्ट का क्या हुआ?

पप्पू : (**उसी तरह दबे पाँव दौड़ता हुआ आता है और कुछ दूरी से ही फुसफुसा कर कहता है**) मैं तो गीता बनूँगा।

राकेश : हैं... !

पप्पू : (**करीब आकर**) मैं गीता बनूँगा।

राकेश : हाँ।

पप्पू : राकेश भैया, विनोद मुझे कह रहा था कि तू लड़की का पार्ट अच्छा नहीं कर पायेगा।

राकेश : पप्पू, यह बहुत बुरी बात है। नाटक से पहले कभी किसी को नाटक के बारे में कुछ नहीं बताना चाहिए। समझे... तुम्हारे बालों का क्या हुआ?

पप्पू : (**अपने बालों को छूकर**) यार, कल पिताजी ने जबर्दस्ती पकड़कर बाल कटवा दिये। बद में मैंने नाटक की बात कही तो एक चाँटा मार दिया और बोले—यह बात पहले कही होती तो खोपड़ी का मैदान ही साफ करवा देता।

सब खिलखिला कर हँस पड़ते हैं।

राकेश : **(पप्पू के सिर के बाल संभालते हुए)** पर अब इनमें ये बाल कैसे रोके जायेंगे? **(नकली बालों की लच्छी जेब से निकाल कर देता है।)** लो, लगाकर देखो तो...।

पप्पू शीशे के सामने खड़ा होकर बाल अटकाने का प्रयत्न करता है।

राकेश : बिंदु, अपना डायलाग बोलो। **(बिंदु दरवाजे के पास खड़े खड़े ही बोलने लगता है।)**

बिंदु : चमन देख, अगर तू ने मेरी भैंस...।

राकेश : अरे... रे.... रे... वहीं से नहीं भाई... इधर आओ। **(बिंदु जीभ निकाले दाँतों से दबाये, दबे पाँव, अजीब-सी चाल चलता हुआ आता है)** वहाँ खड़े-खड़े ही बोलने लगे?

बिंदु : यह तो रिहर्सल है राकेश भाई! रिहर्सल में तो ऐसे ही चलता है।

राकेश : **(झुँझलाते हुए)** ऐसे ही चलता है! बस, ऐसे ही फिर वहाँ स्टेज पर कर दोगे....! प्रदीप! तुमने मूँछें लगा लीं? इधर आ जाओ।

प्रदीप मूँछें चिपकाये मुँह और होंठो को ऊँचा किये धीरे-धीरे चलकर राकेश के पास आकर खड़ा हो जाता है।

राकेश : हाँ, तो बिंदु, तुम यह लकड़ी हाथ में रखोगे। **(एक कोने में रखी लकड़ी उठाकर देता है)** और देखो, ऐसे बोलना



है तुम्हें (**खुद अभिनय करके बोल के बात बताता है**) 'देख चमन, मेरी भैंस तो क्या, मेरी भैंस की पूँछ का बाल भी तूने छू लिया तो....।'

बिंदु : (**गरदन हिलाते हुए**) ठीक है, अब समझ गया मैं।... 'हाँ, देख बे चमन...।'

राकेश : देख बे नहीं भाई, 'देख चमन....।'

बिंदु : हाँ नहीं भाई, (**झुँझलाता है**) 'देख चमन....।'

बिंदु : देख चमन, अगर मेरी भैंस की बाल का, ... अरे यार भूल गया.... (**सब हँस पड़ते हैं**) हाँ, भैंस की पूँछ का...।

राकेश : फिर से बोलो।

बिंदु : देख चमन, मेरी भैंस तो क्या, भैंस की पूँछ का एक बाल भी तने छुआ।

प्रदीप : बाल...! भैंस का बाल तो क्या, तेरी सारी भैंस को उठा कर ले जाऊँगा, समझा... (**प्रदीप की मूँछे लटक जाती हैं, उन्हें ठीक करने लगता है।**)

बिंदु : (**मुँह बिचकाकर**) फिर वही झूठी शान दिखाई! नाटक में तो कम से कम शान मत दिखा... हँ.... अ.... यह कौन-सा डायलाग बोल रहे हो? (**कापी में देखता है**) नाटक में तो यह डायलाग नहीं है बिंदु?

बिंदु : और वह डायलाग है, जो प्रदीप ने बोला है?

राकेश : कौन सा?

बिंदु : वही... कि भैंस को उठाकर ले जाऊँगा।

राकेश : हाँ, यह तो लिखा है।

बिंदु : (**मुट्ठी बाँधकर हाथ ऊँचा उठाकर विश्वास के साथ**)

गलत लिखा है। बड़े-बड़े पहलवान भैंस को उठाकर नहीं ले जा सकते।

राकेश : अच्छा बाबा... अच्छा। **(प्रदीप की ओर मुड़कर)** प्रदीप, ऐसा बोल देना कि भैंस को भगाकर ले जाऊँगा...। **(पप्पू से)** पप्पू... मेरा मतलब गीता, जल्दी चलो तुम्हारा काम आ गया है।

पप्पू कमीज व हाफपेंट पहने है। सिर पर नकली बाल अटका रखे हैं।

पप्पू : बिंदु, तुम जरा दरवाजे पर खड़े हो जाओ।

बिंदु दरवाजे पर चला जाता है।

राकेश : हाँ तो प्रदीप, तुम दोहराओ अपना डायलाग।

प्रदीप : बाल! भैंस का बाल तो क्या, तेरी पूरी भैंस को भगा कर ले जाऊँगा, समझे।

वह अपनी लटकती मूँछ को बार-बार चिपकाता रहता है।

पप्पू : समझ लिया...! तू ही अकेला मरद है... मैं भी देखती हूं, कैसे मेरी भैंस भगाकर ले जाता है, देखें...? हाथ तो लगा... **(पाँव और गरदन को झटका देकर बोलने से बाल जमीन पर गिर पड़ते हैं। पप्पू हँसता हुआ उन्हें उठा लेता है।)**

प्रदीप : **(राकेश की ओर देखकर)** भैंस के बिना किसे भगाऊँ अब?

तभी बाहर के दरवाजे से अनिल दौड़ता-हाँफता आता है। हाथ में काले कपड़े की गठरी है।

राकेश : बहुत देर कर दी अनिल।

अनिल : **(हाँफते हुए)** क्या बताऊँ यार, भैंस का मुँह सूखने में देर हो गयी।

सब : क्या सूखने में?

अनिल : भैंस का मुँह...।

राकेश : अच्छा-अच्छा, कोई बात नहीं। एक बार फिर रिहर्सल कर लेंगे।

अनिल चौपाये की तरह बन जाता है। साथ में लाया हुआ काला कपड़ा ओढ़ लेता है। काले कपड़े, कागज और पुट्ठे से भैंस का मुँह और भैंस की खाल बनाई थी। अनिल उसे पहन लेता है। उसे ठीक से पहनाने में कागज का बना मुँह फट जाता है। सब हँस पड़ते हैं।

राकेश : **(हँसते हुए)** अरे अनिल, तुमने भैंस की पूँछ तो बनाई ही नहीं? झगड़ा किस बात पर होगा।

फिर सब हँस पड़ते हैं।

अनिल : बनाई तो थी यार.... **(घुटनों के बल खड़ा होकर और कपड़े से मुँह निकाल कर)** पर गोंद से बाल चिपका कर मैं इधर-उधर हुआ कि उसे चूहा खींच कर अपने बिल में ले गया। कल दूसरी बनाऊँगा यार। लो, अभी तो इससे काम चलाओ। **(जेब से काले सूत की चुटिया निकाल कर देता है।)**

सब अनिल की इस सूझ पर हँस लेते हैं। अभी हँसी थमी ही थी कि राकेश के पिताजी का स्वर फिर सुनाई देता है।

पिता : **(नेपथ्य से)**राके...श!

बिंदु : **(फुसफुसाते हुए)** रा...के...श, रा...केश.. तुम्हारे पिताजी।

राकेश : हैं... पिताजी?...अब।

अनिल भैंस की खाल ओढ़े ही चौपाये की तरह तेज़ी से कहीं ओट में छिप जाने के लिए चलता है। गले में दो तीन गज लंबा रस्सा बंधा है जिसका एक छोर पप्पू के हाथ में होता है। रस्सा खिंचने से पप्पू के हाथ को झटका लगता है और उसी हाथ से दबी, कमर पर रखी छोटी मटकी गिरकर फूट जाती है। अनिल खड़ा होकर खाल उतारने की कोशिश करता है। पर गले में रस्सी बंधा होने के कारण नहीं उतार पाता है। वह काला कपड़ा सिर पर ओढ़ा हुआ-सा लगने लगता है। अनिल उसे हटाने के लिए हाथ पाँव चलाता रहता है। पप्पू ओढ़नी हटा चुका है। लहंगे में से पाँव निकाल रहा होता है। प्रदीप जमीन पर पड़ी चीजें समेटने को झुकता है तो उसका भी साफा जमीन पर बिखर जाता है।

बिंदु : राकेश... तुम्हारे पिता जी...। **(दौड़ कर राकेश के पास आ जाता है।)**

सब टेबल, पलंग व जमीन पर पड़ी अपनी-अपनी चीजें उठा लेते हैं। एक मिनट हक्के-बक्के खड़े रह जाते हैं और फिर सब **राकेश के सिवा** उसी ऊटपटांग स्थिति में दरवाजे की तरफ भागते हैं। तभी राकेश टोकता है।

राकेश : अरे...अरे क्या हो रहा है? सब कहाँ भागे जा रहे हो?

(सब वापस लौटकर राकेश के पास आ जाते हैं।) भागने की क्या जरूरत है?

बिंदु : तो फिर क्या करें राकेश?

राकेश गंभीरता से सोचता है। बाकी सब उसी स्थिति में भौंचक्के से, डरे से खड़े रहते हैं। सब के हाथों में अपना सामान है और विचित्र-सी मुद्रा बनाये खड़े हैं।

प्रदीप : अनिल, तुम्हारा तो मकान लंबा-चौड़ा है। वहाँ तो रिहर्सल आराम से हो सकती है।

अनिल : हाँ, मकान तो काफी बड़ा है, परंतु मेरे ही घर पर खेल सकते होते तो मैं यहाँ चोरी-चोरी खेलने क्यों आता। मेरे पिताजी बैरिस्टर हैं...।

पप्पू : घंटों दूसरे वकीलों वगैरह से बहस कर लेते होंगे, पर जहाँ तुमने जरा-सा शोर किया और उनका सिर दुखने लग जाता होगा, क्यों?

अनिल : हाँ भाई! बड़े-बड़े लोग उनके पास दिन भर बैठे रहते हैं...।

राकेश : **(यकायक)** तो चलो, फिर अनिल के यहाँ ही चलेंगे।

अनिल : मेरे यहाँ। मेरे मम्मी-डैडी...।

राकेश : **(उसी उत्साह से)** तुम सब सामान तो उठाओ। पप्पू, बिंदु, प्रदीप सब उठाओ अपना-अपना बोरिया बिस्तर...।

सब भौंचक्के से राकेश की ओर देखते हुए सामान उठाते हैं। राकेश मुस्कराता रहता है।

प्रदीप : पर राकेश, जब अनिल मना कर रहा है तो फिर उसके यहाँ जाने से क्या फायदा?

बिंदु : हाँ, हम लोगों को तो दुम दबाकर भागना पड़ेगा ही, साथ ही इस अनिल की अक्ल ठिकाने कर दी जायेगी सो अलग।

राकेश : **(प्रसन्नता से)** मैं कहता हूँ, तुम चलो तो सही। न हमें दुम दबानी पड़ेगी, न अनिल की अक्ल ही ठिकाने होगी। हाँ, रिहर्सल जरूर अब से अनिल के यहीं होगी।

अनिल : **(आश्चर्य व हैरानी से)** मेरे यहाँ कहाँ करोगे? कैसे करोगे राकेश?

राकेश : तुम्हारे मकान के पीछे।

अनिल : मकान के पीछे कहाँ? मैं समझा नहीं।

राकेश : अमाँ तुम चलो तो सही। **(राकेश मुस्कराता रहता है।)**

बिंदु : **(उतावला-सा)** बताते क्यों नहीं हो राकेश...! पहेली बुझाने से क्या फायदा?

राकेश : **(प्रसन्नता से)** बता दूँ?

सब : हाँ हाँ, बताओ न। **(सबके चेहरों पर उत्सुकता है।)**

राकेश : अनिल की भैंस के बाड़े में...।

सब : भैंस के बाड़े में? **(आश्चर्य व कौतूहल से सब बोलते हैं। चेहरों पर हल्की-सी चमक व खुशी है।**

पप्पू : और कहीं भैंस ने सींग में उठाकर उछाल दिया तो...?

प्रदीप : तो तुम बाड़े की छत में लटके रहना।

पप्पू : और तुम भैंस की पूँछ में....

अनिल : फिर चल पड़ी तुम्हारी फिरकनी...।

पप्पू जीभ निकाल कर हाथ से पकड़ लेता है।

राकेश : भई, सुबह से शाम तक भैंस तो चराने चली जाती है....।

पप्पू : और उसके बच्चे...?

प्रदीप : (**खीजकर**) उन्हें तुम चुराने ले जाना।

सब पप्पू को घूर कर देखते हैं तो पप्पू तुरंत अपनी जीभ बाहर निकाल लेता है और दोनों हाथों से कान पकड़ कर उठ-बैठ करता है।... **नेपथ्य से**—बाबू श्यामलाल जी... दरवाजे की कुंडी की खटखट के साथ बाबू श्यामलाल जी साहब।

राकेश के पिता : कौन है? (**कुंडी खटखटाने की आवाज़**)राकेश... ओ रा..के..श देख तो कौन है?

मंच पर सन्नाटा। राकेश पंजों के बल चलता हुआ दरवाजे के करीब चला जाता है। पप्पू ज्यों का त्यों कान पकड़े, जीभ निकाले मूर्ति की तरह एक विशेष मुद्रा बनाये खड़ा रह जाता है। प्रदीप, अनिल और बिंदु किसी चीज की ओट में छिपने के लिए अपना सामान बगल में दबाये कभी अलमारी, कभी टेबल, कभी कुर्सी की ओट में दुबकते छिपते रहते हैं। आपस में एक-दो बार टकरा भी जाते हैं। तो एक साथ एक ही स्थान पर दुबकने चले जाते हैं।

(**नेपथ्य से**) मैं हूं रायसाहब का नौकर!.... रायसाहब आपको अभी बुला रहे हैं।

राकेश के पिता : अच्छा भाई, अच्छा। राकेश... ओ... राकेश...।

राकेश : जी...। **(अंदर चला जाता है और दूसरे ही क्षण मुँह लटकाये धीरे-धीरे वापिस आता है। मंच पर अकेले पप्पू को देखकर आश्चर्य से भरी दबी आवाज से)** अरे, कहाँ गये सब के सब?

पप्पू : **सीधा होते हुए)** भैंस चराने।

राकेश : **(दबी आवाज में ही)** चलो भाई, चलो...।

तीनों चारों एक-एक चीज की ओट से निकल कर आते हैं। अजीब-सी चाल व हास्यास्पद मुद्रा बनाये।

सब : कहाँ? वहीं भैंस के बाड़े में?

राकेश : **(करीब आते साथियों को भौंचक्का सा देखते हुए) हाँ** भाई... वहीं...।

सब : तो चलो.. चलें। **(और दरवाजे की ओर चल पड़ते हैं।)**

राकेश : अरे, तुम सब तो सचमुच चल दिये।

सब : तो ...? **(वहीं मुड़कर खड़े हो जाते हैं।)**

राकेश : अरे भाई, पिताजी तो गए ही, साथ में मामा जी को भी...।

सब : **(आश्चर्य से)** सच?

राकेश : हाँ...। सच। बिल्कुल सच।

प्रवीप : फिर...।

राकेश : **(मुँह में उंगली डालकर सीटी बजाता है)** रिहर्सल **(रुककर)** शुरू...। **(ताली के साथ...)**

सब राकेश के चारों ओर घेरा बना लेते हैं। एक के पीछे एक चलने के लिए दौड़ने की-सी मुद्रा बना लेते हैं। फिर सब नाचते हैं उछलते राकेश के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।


CREA
GLUE

पात्र

कैलाश	:	सबसे बड़ा भाई
तनुजा	:	सबसे छोटी बहन
कमलेश	:	संतोष से छोटी बहन
संतोष	:	कैलाश से छोटा भाई
बाँकेलाल	:	घर का नौकर

अब हम आजाद हैं

डा. मस्तराम कपूर

शहर के एक अच्छे मकान का कमरा। कमरा सजधजपूर्ण है। मेज, कुर्सियाँ, कोच, पुस्तकें और दीवारों पर तस्वीरों के अतिरिक्त कमरे में टेलीफोन भी है। पर्दा उठते ही कमरा खाली दिखाई पड़ता है, फिर बगल के दरवाजे से संतोष, कमलेश, तनुजा और कैलाश हाथ में बस्ते लिये प्रवेश करते हैं।

कैलाश : यहाँ भी कोई नहीं। कहाँ चले गये सब लोग? (**चिल्लाकर माँ,**) तुम कहाँ हो?

तनुजा : (**उसी तरह चिल्लाकर**) मम्मी हम स्कूल से आ गये हैं।

कमलेश : अरे रे... तनुजा तो मम्मी-डैडी कहती है। (**हँसकर**) मम्मी... (**तनुजा को चिढ़ाती है।**)

संतोष : तनुजा के स्कूल में सभी मम्मी-डैडी ही कहते हैं। क्यों तनुजा ठीक है न? (**हँसता है।**)

तनुजा : नहीं, नहीं मैंने मम्मी नहीं, अम्मी कहा, अम्मी।

कैलाश : और बाँकेलाल भी न जाने कहाँ लापता है।... बाँकेलाल, ओ बाँकेलाल।







नौकर बाँकेलाल भागा-भागा आता है।

कैलाश : अरे बाँकेलाल क्या बाराबंकी चले गये थे?

बाँकेलाल : बड़े भैया, मैं तो... मैं तो बगीचे में पानी को फूल दे रहा था।

कमलेश : अर्र-र्र। **(शर्मिंदा हो जाता है।)**

कैलाश : माँ कहाँ है?

बाँकेलाल : बड़े भैया, माँ जी बाजार गयी हैं, आप लोगों के लिए कपड़े खरीदने और बाबूजी दफ्तर से देर से आने वाले हैं। माँ जी कह गयी हैं कि लड़ना-झगड़ना मत। अपना-अपना काम का स्कूल ठीक से करना।

संतोष : बाँके, रे बाँके, तू उल्टी-सीधी हाँके। काम का स्कूल ठीक से करना या स्कूल का काम?

बाँकेलाल : अर्रर्र... स्कूल का काम ठीक से करना। और माँ जी आप लोगों के लिए एक चिट्ठी रख गयी हैं, उसमें सारी बातें लिखी हुई हैं।

कैलाश : लाओ कहाँ है? बाँकेलाल मेज की दराज से चिट्ठी निकालता है। कैलाश पढ़ता जाता है और बाँकेलाल समर्थन में सिर हिलाता जाता है।

कैलाश : लिखा है, मैं तुम्हारे लिए गरम कपड़े खरीदने जा रही हूँ। मेरे आने तक नीचे लिखे काम करना। काम नंबर एक—अलमारी में हलुआ रखा है, पहले उसे बाँटकर खा लेना।

तनुजा : मैं अभी ले आती हूँ।

कैलाश : अरी, अभी सारे काम तो सुन ले।

कमलेश : नहीं, नहीं, पहले यह काम कर लेना चाहिए। गुरूजी कहते हैं, पहले काम बाद में बातें।

कमलेश : हाँ, हाँ, हलुआ खाने का काम पहले। असली काम पड़ेगा तो मुँह इतना-सा हो जायेगा। सुनो। काम नंबर दो—उसके बाद दौड़कर मैदान का एक चक्कर लगाना।

संतोष : मैं अभी लगा आता हूँ।

कैलाश : नहीं, पहले सुन लो। काम नंबर तीन—फिर शांति से एक जगह बैठकर स्कूल में जो कुछ पढ़ा है, उसे याद करना। नंबर चार—फिर कापी में सुंदर अक्षरों में अपनी सबसे प्यारी कविता लिखना। नंबर पाँच—उसके बाद ड्राइंग की कापी में सबसे प्यारे जानवर का चित्र बनाना। नंबर छः-फिर सब मिलकर 'हम बालकों की ओर भी भगवान तेरा ध्यान हो' वाली प्रार्थना गाना।

तनुजा : इतने सारे काम?

कमलेश : मैं तो सिर्फ पहला काम कर सकती हूँ।

संतोष : स्कूल में काम, घर पर काम, सुबह काम, शाम काम, यह सब नहीं होगा।

कैलाश : होगा कैसे नहीं। मैं देखता हूँ, तुम लोग ये सब कैसे नहीं करते हो?

तनुजा : तुम कौन होते हो हमसे काम लेने वाले?

कैलाश : चुप रहो। मैं तुम सबसे बड़ा हूँ और जो बड़ा होता है, वह छोटों से काम लेता है।

कमलेश : जब तुम्हें किसी ने कहा नहीं तो तुम चौधरी कैसे बन गये? काम न करने का यह अच्छा बहाना है।

कैलाश : अच्छा, यह बात है, तो मैं अभी पिताजी से पूछता हूँ।

कैलाश तेजी से टेलिफोन घुमाता है, फिर रिसीवर उठाकर—

: हेलो... हेलो! पिताजी, बात ये है कि माँ हमारे लिए गरम कपड़े खरीदने गयी है। हमारे लिए कुछ काम भी बता गयी है। मैं इन सबसे वे काम करने को कहता हूँ, लेकिन ये कहते हैं कि तुम कौन होते हो हुक्म चलाने वाले। अब आप ही बताइए पिताजी, मैं इन सबसे बड़ा हूँ। इन्हें मेरा हुक्म मानना चाहिए न... अच्छा! मैं कमलेश को बुलाता हूँ।

कमलेश : **(टेलिफोन पर)** पिताजी, मैं 'ना' कब कह रही हूँ... हाँ... हाँ... तनुजा और संतोष भी मानेंगे। **(टेलीफोन रखती है)**

कैलाश : अच्छा बाँकेलाल, अब तुम अपना काम करो, जाओ।

बाँकेलाल जाता है।

कैलाश : कमलेश, अलमारी से हलवे की प्लेट निकाल लाओ।

कमलेश हलुआ लेकर आती है।

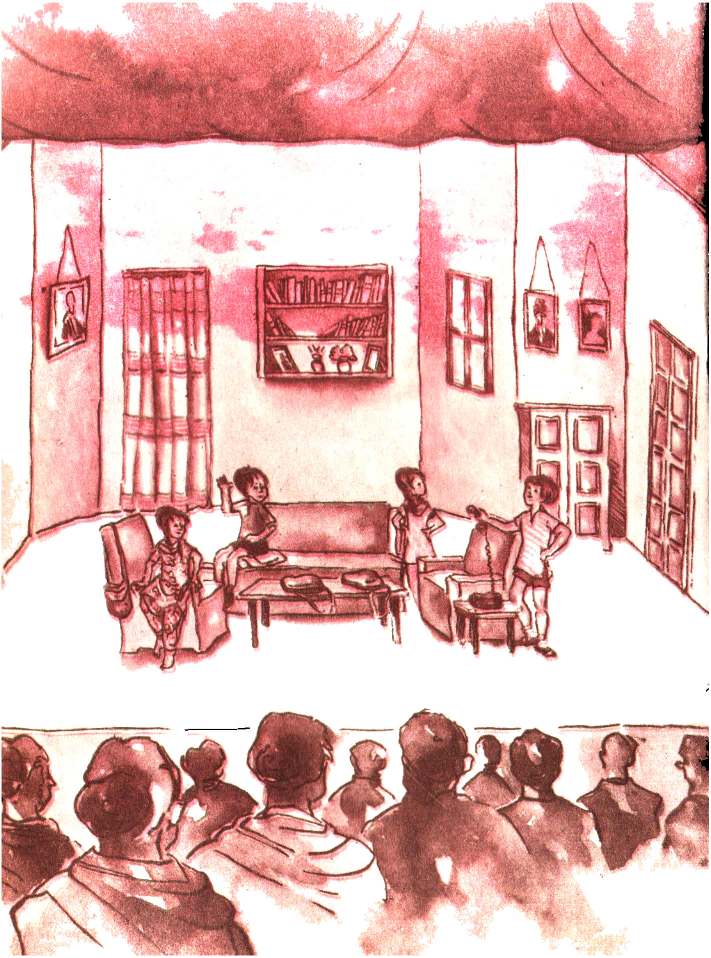
कैलाश : यह मुझे दो और तुम तीनों लाइन में खड़े हो जाओ।

कैलाश हलुवे के चार हिस्से करता है। एक हिस्सा उठाकर खाने लगता है और तीनों उसका मुँह ताकते हैं।

तनुजा : हलुआ अकेले ही खाओगे? मुझे नहीं दोगे?

कैलाश : चुप! अपना-अपना हिस्सा उठा लो और जल्दी से खाओ।

तीनों हलुआ खाकर मुँह पोंछते हैं।



कैलाश : अब काम नंबर दो, सबको दौड़कर मैदान का एक चक्कर लगाना है। संतोष तैयार हो जाओ। एक-दो-तीन, दौड़ो।

संतोष दौड़ता हुआ बाहर निकल जाता है। कमलेश और तनुजा भी पीछे-पीछे जाती हैं, फिर दौड़ते हुए वापस आते हैं।

कैलाश : शाबाश! अब तुम लोग काम नंबर तीन के लिए तैयार हो जाओ। अपनी-अपनी पुस्तकें निकालो।

तीनों अपनी-अपनी पुस्तकें निकालते हैं।

कैलाश : तनुजा, तुमने कौन-सा पाठ पढ़ा है?
तनुजा : कौए वाला।
कैलाश : चलो, पढ़ो।
तनुजा : एक कौआ डाल पर बैठा था। उसके मुंह में माँस का टुकड़ा था। वह...
कैलाश : तनुजा, दूसरों को भी काम करना है। अपने मुँह में पढ़ो।
तनुजा : अपने मुँह में नहीं तो क्या तुम्हारे मुँह में पढ़ रही हूँ?
कैलाश : बातें कम, काम ज्यादा।

तनुजा मुँह बिचकाकर उसे चिढ़ाती है।

संतोष : तुम भी निकालो न अपनी पुस्तक।
कैलाश : मैं तुम लोगों की निगरानी करूँगा या पढ़ूँगा?

तीनों पढ़ने लगते हैं। कैलाश फिर कमरे का चक्कर लगाने लगता है। कुछ देर बाद।

कैलाश : पाठ याद हो गया तो उठो, काम नंबर चार।

तनुजा : पाठ इतनी जल्दी कैसे याद हो गया?

कमलेश : तुम तो चिड़ियाघर के शेर की तरह चक्कर लगा रहे हो। हम पढ़ेंगे कैसे?

कैलाश : अच्छा, मैं तब तक बाग में टहलता हूँ। लेकिन काम जल्दी-जल्दी खत्म होना चाहिए।

कैलाश बाहर जाता है।

तनुजा : **(पुस्तक पटककर)** मुझसे तो यह रोब नहीं सहा जाता।

कमलेश : हमारी नाक में दम कर दिया है और आप ठाठ से बगीचे में टहल रहा है।

तनुजा : चलो, हम दूसरे दरवाजे से बाहर चले जायेंगे और सड़क के पार जाकर खेलेंगे।

संतोष : नहीं, ऐसा काम करो कि कैलाश को हम पर रौब गाँठने का मौका ही न मिले।

कमलेश : लेकिन कैसे?

संतोष : देखो, माँ ने हमें छः काम बताए हैं। तीन काम हमने कर लिए हैं, तीन बाकी हैं। कैलाश के अंदर आने से पहले हम तीनों काम खत्म कर लेंगे। फिर वह हमें आज्ञा किस बात की देगा?

तनुजा : बात तो ठीक है। अच्छा, कौन-कौन से काम बाकी हैं?

संतोष : एक कविता लिखनी है, एक चित्र बनाना है और फिर प्रार्थना करनी है।

कमलेश : तो आओ, जल्दी-जल्दी तीनों काम कर डालो।

तीनों कविता लिखते हैं। फिर झट से रंग उठाकर चित्र बनाने लगते हैं। तनुजा कूची हाथ में लिए बालों को संभालने के प्रयास में अपने मुँह को रंग लेती है। इतने में बाँकेलाल आता है।

बाँकेलाल : छोटे भैया, बड़े भैया पूछते हैं कि छोटे भैया आ गये हों तो बड़े भैया पाठ याद कर लें।

संतोष : बाँकेलाल, पाठ छोटे भैया याद करेंगे और आयेंगे बड़े भैया।

बाँकेलाल : अर्रर... छोटे भैया, ऐसा ही पूछा है।

कमलेश : तो उससे कहो, पाठ याद होने ही वाला है। थोड़ी देर और ठहर जाओ।

बाँकेलाल : लेकिन, बड़ी दीदी, वह तो गुस्से में लाल-लाल हो रहे हैं।

कमलेश : तो उसे एक गिलास ठंडा पानी पिलाओ। जाओ।

बाँकेलाल जाता है।

संतोष : कमलेश, तुमने किसका चित्र बनाया है?

कमलेश : चिड़ियाघर में शेर।

संतोष : तो इसे काली नेकर क्यों पहनाई है?

कमलेश : कैलाश ने काली नेकर ही तो पहनी है।

तनुजा : अरे, बातें मत करो, वह अभी आ जाएगा, तो सब टाँय-टाँय फिस्स हो जाएगा।

तीनों फिर काम में जुट जाते हैं। बाँकेलाल फिर आता है।

बाँकेलाल : बड़े भैया आ रहे हैं... बड़े भैया आ रहे हैं।

तीनों अपनी कापियाँ बंद करके हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं, और प्रार्थना गाने लगते हैं।

तीनों : **(गाते हैं)** हम बालकों की ओर भी, भगवान तेरा ध्यान हो।

हो दूर सारी मूर्खता, कल्याणकारी ज्ञान हो।

कैलाश गुस्से से भरा हुआ अंदर आता है।

कैलाश : यह क्या हो रहा है? बंद करो इसे।

तीनों गाते रहते हैं। कैलाश आपे से बाहर होकर पाँव पटकता है।

कैलाश : मैं कहता हूँ, बंद करो यह प्रार्थना।

तीनों चुप।

कैलाश : मैं पूछता हूँ, मेरी आज्ञा के बगैर प्रार्थना क्यों शुरू की?

तीनों चुप।

कैलाश : चलो, पहले कविता लिखो। निकालो कापियाँ। **(तनुजा अपनी कापी दिखाती है।)**

कैलाश : **(कापी फैंक कर)** कविता लिखने के लिए तुम्हें किसने आज्ञा दी थी?

संतोष और कमलेश की ओर देखकर

—क्या तुम लोगों ने भी कविता लिख ली है?

संतोष और कमलेश : हाँ।

कैलाश : मैं पूछता हूँ, क्यों?

तीनों चुप।

कैलाश : अच्छा, ड्राइंग की कापियाँ निकालो, चित्र बनाओ।

संतोष : चित्र भी हमने बना लिया है।

कैलाश : बना लिया है? (हक्का-बक्का होकर देखता है।)

कमलेश : (**कापी दिखाकर**) यह देखो।

कैलाश : (**कापी फेंककर**) मैं पूछता हूं मेरी आज्ञा के बगैर चित्र क्यों बनाया? और यह क्या बिल्ले जैसी शक्ल बनाई है?

तनुजा : भाईसाहब, यह तो आपका ही चित्र है।

कैलाश : बंद करो यह बकवास। मुर्गा बनो।

तनुजा : क्यों बनूँ मुर्गा? हमने सारे काम कर लिये हैं। अब हम बाहर खेलने जायेंगे। चलो कमलेश, चलो संतोष।

कैलाश : मैं तुम्हें बाहर जाने की आज्ञा नहीं देता हूं।

संतोष : भाईसाहब, आपको सिर्फ छः कामों के लिए पिताजी ने अफसर बनाया था। काम हमने कर लिये, अब हम आजाद हैं। हमें किसी की आज्ञा की जरूरत नहीं। टा... टा... (**बाहर जाता है**)

कमलेश और तनुजा : टा...टा... बड़े भैया... (**दोनों बाहर जाती हैं। कैलाश आश्चर्य से और उदास सा होकर उनकी ओर देखता रहता है।)**

बाँकेलाल : कोई बात नहीं बड़े भैया। मुफ्त की अफसरी थी चली गयी तो अफसोस क्या?

कैलाश : (**चिल्लाकर**) खामोश... (**बाँकेलाल डरकर भागता है।)**

पात्र

अध्यक्ष	:	बाल-संसद के अध्यक्ष
राम गरीब	:	
चंद्र भूषण	:	
चंदू राम	:	
नंदू राम	:	
कालू राम	:	सभी बाल-संसद के सदस्य
कु. नीलम	:	
राजीव	:	
वित्त मंत्री	:	
सूचना मंत्री	:	
गृह मंत्री	:	
रक्षा मंत्री	:	
खाद्य मंत्री	:	
शिक्षा मंत्री	:	
मार्शल	:	बाल-संसद का मार्शल जो अध्यक्ष के पीछे
	:	खड़ा होगा

बाल-संसद

डा. हरिकृष्ण देवसरे

इसे मंच अथवा किसी बड़े कमरे में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसकी मंच व्यवस्था साधारण है। दो ओर अर्ध-गोलाकार रूप में आवश्यकतानुसार मेज-कुर्सियाँ रखी हों। सदस्य के रूप में कुछ अतिरिक्त बच्चे भी बिठाए जा सकते हैं। एक ओर कुछ ऊँचाई पर अध्यक्ष की कुर्सी-मेज होगी। अभिनेता बालक चाहें तो मेकअप कर सकते हैं, चाहें तो साधारण वेशभूषा से भी काम चला लें। लेकिन कपड़ों में भिन्नता हो तो अच्छा है। मार्शल आवाज लगाता है—

मार्शल : अध्यक्ष महोदय सदन में पधार रहे हैं।

अध्यक्ष अपने स्थान पर आकर बैठते हैं। उनके सम्मान में सभी सदस्य उठते हैं और फिर अध्यक्ष के साथ ही बैठ जाते हैं।

अध्यक्ष : आज की कार्यवाही का आरंभ प्रश्नोत्तर काल से हो रहा





है। इसके बाद शिक्षा मंत्री द्वारा एक महत्वपूर्ण बिल प्रस्तुत होगा, जिस पर बहस भी होगी। श्री रामगरीब पांडे अपना प्रश्न पूछें।

रामगरीब : (**उठकर**) क्या वित्त मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि उनका वित्तीय वर्ष पहली अप्रैल से क्यों शुरू होता है? क्या वे इस तारीख के महत्व को नहीं जानते? (**बैठ जाता है**)

वित्त मंत्री : माननीय सदस्य अगर पहली अप्रैल के महत्व को समझते हैं तो यह भी जानते होंगे कि धन की देवी लक्ष्मी का वाहन कौन है और पहली अप्रैल से उनका क्या रिश्ता है? वर्ष भर बजट की गाड़ी चलाने के लिए क्या इससे अच्छा कोई और वाहन हो सकता है?

अध्यक्ष : श्री चंद्रभूषण सिंह।

चंद्रभूषण : (**खड़े होकर**) क्या सूचना और प्रसारण मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि देश के विभिन्न समाचार-पत्रों में छपने वाले 'गड़बड़ रेडियो' के प्रोग्रामों पर अब तक रोक क्यों लगायी गयी? (**बैठ जाता है**)

सूचना मंत्री : मैं माननीय सदस्य को बताना चाहता हूँ कि 'गड़बड़ रेडियो' के मीटरों का कुछ भी पता नहीं चल सका है। मालूम हुआ है कि यह कुछ शरारती बच्चों का खेल-मात्र है। इससे सरकार को कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन हां, अगर कभी गड़बड़ रेडियो से किसी बच्चे की शैतानी की पोल खोल दी गयी तो उसकी जिम्मेदारी हम पर न लादी जाये। अच्छा होगा, यदि लोग इन गड़बड़ रेडियो स्टेशनों के मालिकों से होशियार रहें।

अध्यक्ष : श्री चंदूराम।

चंदूराम : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि महंगाई भत्ते की दर में बढ़ोत्तरी की घोषणा के साथ-साथ बच्चों के जेब-खर्च में बढ़ोत्तरी की घोषणा क्यों नहीं की जाती?

वित्त मंत्री : (**तुरंत खड़े होकर**) क्योंकि बच्चों की जेंबे ही छोटी हैं। सुना है कि कुछ दर्जियों ने बड़ी जेबें बनाने की साजिश की है। सरकार उन दर्जियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने पर विचार कर रही है। बच्चों की जेबें बड़ी बनाना अपराध है। इससे उनमें फिजूलखर्ची बढ़ती है।

चंदूराम : लेकिन यह हमारे साथ अन्याय है।

वित्त मंत्री : अन्याय की कोई बात नहीं है। बड़ी जेबें ज्यादा खर्च.. छोटे मुँह बड़ी बात...।

सब हँस पड़ते हैं।

अध्यक्ष : श्री नंदूराम।

नंदूराम : मैं सदन के सामने एक रहस्य का उद्घाटन करना चाहता हूँ। हमारे गृह मंत्री ने सादगी का आदर्श प्रस्तुत करने की प्रतिज्ञा की है। इसलिए सरकारी मोटर छोड़कर सरकारी साइकिल ली है। लेकिन मंत्री महोदय साइकिल को खुद नहीं चलाते उसका उपयोग कोई और करता है। मंत्री जी साइकिल के कैरियर पर बैठकर आते हैं।

सदन में ठहाका लगता है।

गृहमंत्री : (हँसी के दौरान) मैं माननीय सदस्य की बात से सहमत हूँ। मैं साइकिल के कैरियर पर बैठकर आता हूँ। चूँकि मैं साइकिल चलाना नहीं जानता इसलिए मैंने कंपनी के अवकाश-प्राप्त साइकिल-चालक को अपना ड्राइवर बना लिया है।

कुछ सदस्य : (**उठकर**) साइकिल खुद चलाइये... सादगी का पालन कीजिए...।

शोर मचता है।

अध्यक्ष : आप लोग बैठ जाइए... शांत हो जाइए....

सदस्य बैठ जाते हैं।

देखिए, जिस तरह आप अंग्रेजी बोलने वाले को हिंदी बोलने के लिए मजबूर नहीं कर सकते, उसी तरह किसी को साइकिल चलाने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। (**रुककर**) अगला प्रश्न.. श्री कालूराम।

कालूराम : (**खड़े होकर**) क्या स्वास्थ्य मंत्री महोदय अपने स्वास्थ्य का रहस्य बतायेंगे?

सदन में हँसी और गड़बड़ी।

अध्यक्ष : आप इस तरह के प्रश्न मत पूछिए... अपने शब्द वापस लीजिए।

कालूराम : (**खड़े हुए**) लेकिन मैंने तो सिर्फ स्वास्थ्य....



अध्यक्ष : सदन का समय नष्ट न करें। कृपया तुरंत शब्द वापस लीजिए।

कालूराम : मैं शब्द वापस लेता हूँ।

बैठ जाता है।

अध्यक्ष : कु. नीलम।

कु. नीलम : क्या रक्षा मंत्री महोदय उन व्यक्तियों के नाम बता सकते हैं जो पिछले दिनों एन.सी.सी. परेड में बंदूक चलाने के अभ्यास से डरकर भाग खड़े हुए थे? उनके खिलाफ क्या कार्यवाही की गयी, यह भी बतलाइए।

रक्षा मंत्री : बंदूक चलाने के डर से जो लड़के भागे थे....

वाक्य पूरा नहीं हो पाता और शोर मच जाता है।

अध्यक्ष : शांत हो जाइए... उन बच्चों के नाम जरूर बताए जाने चाहिए। अगर ऐसा न किया गया तो देश में डरपोक बालकों की संख्या बढ़ेगी। (**रक्षा मंत्री से**) आप नाम बताइए यह देश के हित में है।

रक्षा मंत्री : उन बच्चों के नाम हैं– रमेश कुमार कक्षा आठवीं, सुनील चंद्र कक्षा सातवीं, कुलभूषण कक्षा नवीं, चंद्रदत्त कक्षा आठवीं. और सुरेंद्र प्रसाद कक्षा नवीं। इन सबके नाम 'बुजदिलों की लिस्ट' में लिखकर नोटिस बोर्ड पर टाँग दिए गये हैं।

सदन में हँसी-हुल्लड़ मचता है।

अध्यक्ष : शांत... शांत... अब प्रश्नोत्तर काल समाप्त।

राजीव : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक प्रश्न राष्ट्र के हित में है, जो मैं खाद्य मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ।

अध्यक्ष : ठीक है। इसके बाद कोई प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं मिलेगी।

राजीव : जिस तरह गरीब आदमी अधिक गरीब और अमीर आदमी अधिक अमीर हो रहा है, उसी तरह दुबला आदमी अधिक दुबला और मोटा आदमी अधिक मोटा हो रहा है। खाद्यमंत्री महोदय क्या इस बारे में कोई उपाय कर रहे हैं?

खाद्य मंत्री : हमने नयी राशन-नीति तैयार की है। सदन की अगली बैठक में इस बारे में एक बिल आयेगा। हम इस नयी नीति के अनुसार ज्यादा वजनवालों याने मोटे लोगों को कम और हल्के वजन वालों को ज्यादा राशन देंगे। राशन होल्डरों को तोलने और उनके लिए राशन की मात्रा तय करने का भी एक फार्मूला बनाया गया है। आशा है इससे देश में मोटापा कम किया जा सकेगा।

अध्यक्ष : अब शिक्षा मंत्री जी सदन के सामने 'अल्पाहार संबंधी बिल' प्रस्तुत करें।

शिक्षा मंत्री : अध्यक्ष महोदय व सदन के माननीय सदस्यो! पिछले काफी दिनों से हम स्कूल के बच्चों की समस्याओं की जाँच-पड़ताल कर रहे हैं। हाल ही में हमने एक जाँच आयोग भी बिठाया था। उसके अध्यक्ष डा. मिश्रा ने जो रिपोर्ट दी है उसमें कहा गया है कि बच्चों को दोपहर का अल्पाहार ठीक से नहीं मिलता। यह एक गंभीर समस्या है। इस दिशा में तुरंत काम होना चाहिए। बच्चे दोपहर

की छुट्टी में स्कूल के बाहर खड़े खोमचे वालों से मूँगफली, चाट, पकौड़ी आदि लेकर खाते हैं। इससे वे बीमार पड़ जाते हैं इसलिए शासन ने आयोग की सिफारिश पर बच्चों को दोपहर का अल्पाहार देने का फैसला किया है। शासन इसकी व्यवस्था स्वयं करेगा। बच्चों से इसके लिए अनिवार्य फीस ली जायेगी। आशा है इस प्रस्ताव को आप सब मंजूरी देंगे।

अध्यक्ष : विपक्षी दल की नेता कु. नीलम।

कु. नीलम : अध्यक्ष महोहय, शिक्षा मंत्री का यह 'अल्पाहार बिल' बच्चों की भावनाओं को कुचलने वाला है। यह उनकी आजादी पर खुला हमला है। बच्चों को खट्टी इमली, बेर, अमरूद, मूँगफली, चाट, पकौड़ी– ये सब चीजें बहुत पसंद होती हैं। इन चीजों को खाने के लिए उन्हें घर पर तो डाँट पड़ती ही है। स्कूल में जो कुछ थोड़ी-सी आजादी मिलती है, उसे भी शिक्षा मंत्री छीनना चाहते हैं। मैं सदन से निवेदन करूँगी कि इस बिल को कदापि न स्वीकार किया जाये।

बैंच-कुर्सियाँ ठोंककर शोर मचाता है।

अध्यक्ष : **(शोर शांत करने के लिए हाथ से संकेत करते हुए)** श्री चंदूराम।

चंदूराम : अध्यक्ष महोदय, यह बिल बहुत खतरनाक है, चूहे के बिल से भी ज्यादा खतरनाक! इसके पीछे छिपा हुआ चूहा न सिर्फ बच्चों का अल्पाहार खायेगा बल्कि उनकी फीस के

रुपये भी खा जायेगा। लगता है, इसमें कुछ हलवाई, दूध, राशन और फलवाले लोग भी शामिल हैं। उन्होंने हमारे अधिकारियों की जेब गरम तो नहीं कर दी?

शिक्षा मंत्री : (**तत्काल उठकर**) यह झूठ है! अपमान है! इन सदस्यों को इसका प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए।

चंदूराम : मैंने तो सिर्फ शक किया है।

दोनों बैठ जाते हैं। हो-हल्ला मचता है।

अध्यक्ष : श्री रामदीन... आप कुछ कहना चाहते हैं?

रामदीन : (**खड़े होकर**) अध्यक्ष महोदय, शिक्षा मंत्री जी का प्रस्ताव सुंदर है। इससे बच्चों में मितव्ययिता आयेगी। उनमें चारित्रिक उन्नयन.... शोर मचता है– 'सरल भाषा बोलिए... पांडित्य न पघारिए...' रामदीन चिढ़ जाता है।

अध्यक्ष : श्री चंद्रभूषण सिंह।

चंद्रभूषण : यह बिल रोजगार में लगे अनेक लोगों को बेरोजगार बना देगा। जरा सोचिए कितने ही खोमचे वालों के परिवार इस आमदनी से पलते हैं। शिक्षा मंत्री उन्हें भूखों मारना चाहते हैं। इससे बेरोजगारी फैलेगी।

अध्यक्ष : स्वास्थ्य मंत्री जी इस बारे में कुछ कहेंगे?

स्वास्थ्य मंत्री : महोदय, स्कूल जाने वाले बच्चों को ज्यादातर बीमारियाँ इन्हीं चीजों से होती हैं। डाक्टरों का कहना है कि चाट, पकौड़ी, दही-बड़े, टाफी, इमली और लालीपाप से कई बीमारियाँ हो जाती हैं। इसलिए यह बिल निश्चय ही बच्चों के हित में है।

अध्यक्ष : श्री नंदूराम।

नंदूराम : अध्यक्ष महोदय, यह बिल माता-पिता पर अतिरिक्त खर्च का बोझ डालेगा। लोग बड़ी मुश्किल से पढ़ाई का खर्च उठा पाते हैं। अस्तु, इसे वापस लिया जाना चाहिए।

अध्यक्ष : अब इस बिल के पक्ष और विपक्ष में मतदान होगा। पहले पक्ष वाले लोग हाथ उठाएं।

अध्यक्ष उठे हुए हाथों को गिनते हैं।

अध्यक्ष : अब विपक्ष वाले हाथ उठाएं।

फिर से हाथों को गिनते हैं।

अध्यक्ष : दोनों ओर से आठ-आठ हाथ उठे हैं।

नंदूराम : अब आप अपना वोट देकर फैसला कीजिए।

इसी समय कुमारी नीलम अध्यक्ष के पास जाकर उन्हें एक लालीपाप देती है। वह खुश होते हैं।

अध्यक्ष : **(लालीपाप चूसते हुए)** भाइयों, क्या मुझे अब भी वोट देने की जरूरत है?

सब लोग हँसते हैं। सदन की कार्यवाही समाप्त होने की घंटी बजती है।

पात्र

रमेश	:	मीना का बड़ा भाई
मीना	:	रमेश की छोटी बहन
माँ	:	रमेश और मीना की माँ
प्रकाश		
राजेन्द्र	:	सब रमेश के मित्र-सहपाठी
संजय		
तीन लड़के		

तोताराम

श्रीकृष्ण

रमेश के घर का एक कमरा। बीच में एक मेज पड़ी है, जिस पर एक किताब खुली रखी है। बराबर में एक कुर्सी पर रमेश बैठा है।

रमेश : (रटते हुए) अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था... अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था। हेमू बनिये की आँख में तीर लगा... हेमू बनिये की आँख में तीर लगा... अकबर का जन्म...

मीना भागी हुई अंदर आती है।

मीना : भैया, तुझे बाबूजी बुला रहे हैं।

रमेश : मैं नहीं आता। जा, कह देना, मैं पढ़ रहा हूँ। अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था...अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था... अकबर का जन्म... अकबर का जन्म...

मीना : चल, भैया, बाबूजी बड़े-बड़े माल लाए हैं... टाफी, बिस्कुट, अहा जी अहा जी!

रमेश : अकबर का जन्म... अकबर का जन्म... देख मुझे भुला दिया न!

एक चांटा लगता है। मीना के रोने से कमरे का कोना-कोना गूँज उठता है।

माँ : (**बाहर से**) अरे रमेश, क्या बात है? मीना क्यों रो रही है?

रमेश : मैंने मारा, मुझे पढ़ने नहीं देती। इतनी मुश्किल से तो याद किया था, आकर सब भुला दिया।

माँ : तो इस समय तू पढ़ क्यों रहा है? यह भी कोई पढ़ने का समय है। क्या मरी चौबीसों घंटों की पढ़ाई हो गयी? जब



देखो तब पढ़ना ही पढ़ना। दिमाग है या मशीन।

रमेश : तुम तो, माँ... हर समय यों ही कहती रहती हो। जब पढ़ूंगा नहीं तो फर्स्ट कैसे आऊँगा? मुझे इस बार फर्स्ट आना है।

माँ : अरे, फर्स्ट आना था, तो शुरू से पढ़ा होता। जब तो हर वक्त खेल ही खेल। अब जब इम्तहान सिर पर आ गए, तो रटने बैठा है! ऐसे रटने से क्या तू समझता है कि फर्स्ट आ जाएगा? अरे, पढ़ना तो थोड़े ही समय का बहुत होता है, अगर नियम से पढ़ा जाए।

बाहर से किसी के पुकारने की आवाज़ आती है।

आवाज़ : रमेश! और रमेश!

मां : जा देख, कौन पुकार रहा है? अब रात में पढ़ना। पढ़ने के समय पढ़ना और खेलने के समय खेलना अच्छा होता है।

रमेश : नहीं, मां, मुझे पढ़ने दो। अब भी पढ़ूंगा, रात को भी पढ़ूंगा।

प्रकाश और राजेन्द्र आते हैं।

प्रकाश : रमेश, अरे भई, इतना पढ़ना अच्छा नहीं होता। हमें भी तो देखो...

राजेन्द्र : हां, भाई, पास तो हमें भी होना है। (**हाथ पकड़कर खींचता है।**)चलो, बहुत पढ़ लिये, अब खेलेंगे।

रमेश : देखो, राज, जिद न करो, नहीं तो लड़ाई हो जायेगी। तुम्हें खेलना है तो खेलो, मैं तो पढ़ूंगा। अकबर का जन्म....

प्रकाश : हम तो तुम्हारे भले के लिए ही कहते हैं, आगे तुम्हारी मरजी। तुम तो पढ़ो, हम तो चलकर खेलते हैं। चलो, राज! (**जाते-जाते धीरे से**) यह तो तोताराम है, तोते की तरह रटता है।

रमेश : अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था... अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था... हेमू बनिये की आँख में तीर लगा... हेमू की आँख में तीर लगा... हां, जी तीर लगा... अकबर का जन्म हेमू बनिए की आँख में हुआ था... नहीं-नहीं, अमरकोट में हुआ था, अकबर का जन्म... (**रटता रहता है।**)

अंतराल

स्कूल का दृश्य : परीक्षा चल रही है। पर्दा उठने पर प्रकाश और राजेन्द्र दिखाई पड़ते हैं। उनके हाथ में एक-एक पर्चा है और स्याही सोखता है। हाथ स्याही में नीले हो रहे हैं।

प्रकाश : हमारा तो पत्ता गोल हो गया।

राजेन्द्र : क्यों, पर्चा तो इतना सख्त नहीं था। सत्रह नंबर तो आ जाएंगे?

प्रकाश : खैर, पास होने में तो कोई टोटा नहीं है... लो, तोताराम भी आ गए (**रमेश आता है**) आओ, हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे। कहो, पर्चा कैसा गया?

रमेश : मजा आ गया। सारे सवाल वही आ गए जिनका रात घोटा लगाया था।

राजेन्द्र : अच्छा! कितने नंबर आ जाएंगे?

रमेश : पचास में से चालीस तो कहीं गए नहीं। तुम्हें कितने नंबरों की उम्मीद है?

राजेन्द्र : यहाँ तो अधिक से अधिक पचास आएंगे। क्यों, तुम्हें कितने नंबरों की उम्मीद है?

राजेन्द्र : यहां तो अधिक से अधिक पचास आएंगे। क्यों, तुमने दूसरा प्रश्न तो किया होगा?

रमेश : क्या सवाल है?

राजेन्द्र : (**पर्चे में से पढ़कर**) तुम अकबर के बारे में क्या जानते हो?

रमेश : (**एकदम रटे हुए पाठ की तरह**) सुनो, अकबर का जन्म सन् 1956 में पोरबंदर गुजरात में हुआ था। वह जहांगीर



का बेटा था। उसने ताजमहल बनवाया था। महा-संगीतज्ञ कालिदास इसके दरबार के नवरत्नों में से एक थे।

राजेन्द्र : **(हंसी दबाते हुए, मुंह बनाकर)** तब तो हमारा यह सवाल भी गलत हो गया।

रमेश : क्यों, तुमने क्या लिखा है?

राजेन्द्र : बाद में बताऊँगा। पहले तुम पांचवे प्रश्न का उत्तर बताओ।

रमेश : सवाल पढ़ो।

राजेन्द्र : माउंट एवरेस्ट कहां है? उसकी चोटी पर सबसे पहले कौन पहुंचा?

रमेश : मैं तो इंगलैंड में लिखकर आया हूँ। यूरी गगारिन सबसे पहले उसकी चोटी पर पहुँचा था। **(उत्साह में भरकर)** और बोलो, कौन से सवाल का जवाब पूछते हो?

राजेन्द्र और प्रकाश के होंठो पर हंसी फूट पड़ना चाहती है पर वे जबरदस्ती रोककर गंभीर बने रहने का अभिनय करते हैं।

राजेन्द्र : **(पर्चे में से पढ़ते हुए)** निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर नोट लिखो: कलकत्ता, कुतुबमीनार, शिवाजी, कोलम्बस और मिसीसिपी।

रमेश : मैं तो कुतुबमीनार , कलकत्ता और शिवाजी पर लिख कर आया हूँ।

प्रकाश : पहले कुतुबमीनार के बारे में बताओ।

रमेश : **(रटे हुए तोते की तरह)** कुतुबमीनार संसार के आठ आश्चर्यों में से एक है। इसे अलाउद्दीन खिलजी ने

बनवाया था। यह गंगा नदी के किनारे पर स्थित है और सफेद संगमरमर की बनी है। कलकत्ता के बारे में भी बताऊँ?

राजेन्द्र : हाँ, बताओ।

रमेश : कलकत्ता भारत की राजधनी है। यह दुनिया का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ तीन प्रकार की रेलें चलती हैं– एक धरती के नीचे, दूसरी धरती पर और तीसरी आसमान में। यहाँ दुनिया में सबसे अधिक वर्षा होती है।

राजेन्द्र : और शिवाजी पर क्या लिखकर आए हो?

रमेश : शिवाजी को हिंदू कुल-भूषण कहा जाता है। वह जीवन भर अपनी मातृभूमि मेवाड़ की स्वाधीनता के लिए शत्रु से जूझते रहे। चेतक इनके प्यारे घोड़े का नाम था। पानीपत के मैदान में बादशाह बाबर से इनकी भयंकर लड़ाई हुई थी। भामाशाह इन्हीं के समय में हुए थे। शिवाजी ने धन देकर उनकी बहुत सहायता की थी। अब तुम भी बताओ, तुम क्या लिखकर आए हो?

राजेन्द्र : **(बनते हुए)** रहने दो, तुम सुनकर हंसी उड़ाओगे।

रमेश : नहीं, हँसी नहीं उड़ाऊँगा, चाहे कसम ले लो। अब तो बताओ।

तभी तीन चार लड़के और आते हैं। इनके हाथ में भी एक-एक पेपर और स्याही की दवातें हैं।

प्रकाश : लो, संजीव भी आ गया।

संजय : **(दूर से ही जोर से)** अरे भाई, तोताराम का क्यों 'घेराव' किया हुआ है?

राजेन्द्र : यार, हम तो उनसे अपने उत्तर मिला रहे हैं। आओ, तुम भी मिला लो।

बायीं आँख दबाकर इशारा करता है।

संजय : क्यों तोताराम जी, तुमने आखिरी सवाल का जवाब लिखा है?

रमेश : **(अकड़ते हुए)** सवाल बोलो क्या है?

संजय : **(पर्चे में से पढ़कर)** सन् 1857 में कौन-सी प्रसिद्ध लड़ाई हुई थी, और किस, किसमें?

रमेश : **(एकदम से)** सन् 1857 में प्लासी की प्रसिद्ध लड़ाई नवाब सिराजुद्दौला और झांसी की रानी अहिल्याबाई में हुई थी। इस लड़ाई में....

उसका उत्तर अभी पूरा भी नहीं होता है कि संजय बीच में ही खिलखिला पड़ता है। राजेन्द्र और प्रकाश की बड़ी देर से दबाई हुई हँसी भी फूट पड़ती है। दूसरे लड़के भी अपनी हँसी नहीं रोक पाते हैं।

रमेश : **(नाराज होकर)** जाओ, मैं नहीं बताता। तुम तो मजाक उड़ाते हो।

संजय : अरे तोताराम जी, मजाक तो तुम कर रहे हो बेचारे इतिहास के साथ।

रमेश : **(न समझते हुए)** क्या मतलब?

संजय : मतलब यह कि सन 1857 में प्लासी की लड़ाई नहीं, प्रथम स्वतंत्रता युद्ध हुआ था। प्लासी की लड़ाई तो 1757 में हुई थी। सौ वर्ष, जनाब, कहाँ खा गये?

प्रकाश : और आजादी की लड़ाई झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेजों में हुई थी, न कि सिराजुद्दौला और अहिल्याबाई में। अहिल्याबाई झाँसी की रानी भी नहीं थी, वह तो इंदौर के होलकर वंश की रानी थी।

एक लड़का : ठीक है मैंने भी यही लिखा है।

दूसरा लड़का : मैंने भी लिखा है।

तीसरा लड़का : मैंने भी।

रमेश : (घबरा जाता है) हाय, मैं तो उल्टा लिख आया। अब क्या होगा?

प्रकाश : रटने का तो यही नतीजा होता है।

रमेश : पर, कोई बात नहीं, फर्स्ट डिवीजन मार्क्स फिर भी आ जाएंगे। चालीस न सही, तीस सही।

राजेन्द्र : हाँ, तीस न सही तो बीस सही। बीस न सही तो गोल गोल अंडा तो कहीं गया ही नहीं।

रमेश : (चिड़कर) अंडा आएगा तुम्हारा।

राजेन्द्र : यह तो तब पता लगेगा, जब रिजल्ट आएगा कि किसका अंडा आता है, हमारा या तुम्हारा? बच्चू, तुमने तो वही बात कर दी– 'कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।' शिवाजी की मातृभूमि मेवाड़ नहीं, महाराष्ट्र है। मेवाड़ तो महाराणा प्रताप की मातृभूमि है। चेतक उनका घोड़ा था।

प्रकाश : और बाबर से तो पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी की लड़ाई हुई थी, शिवाजी की लड़ाई तो बाबर के परपोते के भी पोते औरंगजेब से हुई थी। भामाशाह भी महाराणा प्रताप के समय में हुए थे, शिवाजी के नहीं। और

भामाशाह ने प्रताप की धन से सहायता की थी, न कि शिवाजी ने भामाशाह की।

राजेन्द्र : कुतुबमीनार अलाउद्दीन खिलजी ने नहीं, कुतुबद्दीन ने बनवाई थी। वह किसी नदी के किनारे भी स्थित नहीं है।

प्रकाश : और वह लाल पत्थर की बनी हुई है। सफेद संगमरमर का तो आगरा का ताजमहल है।

राजेन्द्र : कलकत्ता भारत की राजधानी नहीं, बल्कि पश्चिमी बंगाल की राजधानी है। हमारे देश की राजधानी तो दिल्ली है। कलकत्ता में तीन प्रकार की रेलें भी नहीं चलतीं, न ही वह संसार का सबसे बड़ा शहर है। संसार का सबसे बड़ा नगर तो न्ययार्क है जो अमरीका में है। वहीं तीन प्रकार की रेलें चलती हैं।

प्रकाश : और संसार में सबसे ज्यादा वर्षा भी चेरापूंजी में होती है, कलकत्ता में नहीं।

रमेश के चेहरे पर प्रति पल निराशा बढ़ती जा रही है। घबराहट के मारे वह पसीने-पसीने हो रहा है। राजेन्द्र और प्रकाश बिना रुके बोले जा रहे हैं।

राजेन्द्र : माउंट एवरेस्ट इंगलैंड में नहीं, हिंदुस्तान में है, हिमालय की सबसे ऊँची चोटी।

प्रकाश : और इस पर सबसे पहले शेरपा तेनसिंह पहुँचे थे। यूरी गगारिन तो प्रथम अंतरिक्ष विजेता थे।

रमेश : **(उदास स्वर में)** हाय, अब मैं क्या करूँ? मैं तो फेल हो गया।

राजेन्द्र : अभी से घबरा गए! अभी तो और सुनो। अकबर का जन्म अमरकोट में हुआ था, पोरबंदर में नहीं। वहाँ तो बापू का जन्म हुआ था। अकबर का जन्म सन् 1542 में हुआ था, 1556 में नहीं। 1556 में तो उसकी पानीपत के मैदान में अफगानों से लड़ाई हुई थी, जो 'पानीपत की दूसरी लड़ाई' के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रकाश : और अकबर का बाप जहांगीर नहीं, हुमायूँ था। जहांगीर तो बेटा था।

रमेश : हाय, मेरा तो दिल घबरा रहा है। मुझे तो चक्कर आ रहे हैं।

दोनों हाथों में सिर थामकर रमेश नीचे बैठ जाता है। सब लड़के एक जोर का ठहाका लगाते हैं।





पात्र

सूत्रधार	:	बड़ा भाई
राजकुमार चंद्रचूड़	:	मंझला भाई
राजकुमार कपिलदेव	:	छोटा भाई
छोटे भैया	:	बहिन
कामनापूर्ति		
बूढ़ि औरत		

इच्छापूर्ति

सत्येन्द्र शरत

परदा उठने पर मंच लगभग खाली है। दायीं ओर एक कुर्सी रखी हुई है। उसके निकट ही एक छोटी-सी अलमारी है, जिसमें नाटक में काम आने वाला सामान तथा नाटक की प्रापर्टी रखी है। उसके पास ही एक स्टैंड पर स्कूलों में बजाई जाने वाली घंटी लटक रही है। दायीं ओर से भड़कीले वस्त्र पहने नाटक का सूत्रधार मंच पर आता है और मंच के बीचोंबीच आकर खड़ा हो जाता है। बहुत विनम्रता के साथ सिर झुकाकर वह दर्शकों का अभिवादन करता है और तब स्टैंड पर लटकी घंटी को 'टन-टन' कर बजाता है और दर्शकों की ओर मुड़कर कहता है—

सूत्रधार : प्यारे बच्चो, माननीय संरक्षको और आदरणीय अध्यापकगण। बहुत शीघ्र आपके सामने एक नाटक खेला जाने वाला है जो हमारे देश की एक लोककथा पर आधारित है। मैं नाटक का सूत्रधार हूँ, सहायक-निर्देशक और नाटक का प्रापर्टीमैन हूँ। **(इशारे से बतलाते हुए)** इस आलमारी में नाटक में काम आने वाली चीजें यानी नाटक की प्रापर्टी रखी हुई है। देखिये अब मेरे घंटी बजाने पर नाटक के अभिनेता रंगमंच पर आ जायेंगे। **(घंटी बजाता है**



तथा मंच के एक किनारे पर खड़ा हो जाता है। राजकुमार चंद्रचूड़, राजकुमार कपिलदेव तथा उनका छोटा भैया, तीनों एक के पीछे एक मंच पर प्रवेश करते हैं।) ये हमारे नाटक के मुख्य पात्र हैं। ये हैं सबसे बड़े राजकुमार चंद्रचूड़। ये हैं उनके छोटे भाई राजकुमार कपिलदेव और ये हैं इन दोनों के छोटे भैया। राजकुमार चंद्रचूड़ और राजकुमार कपिलदेव आज मछलियों का शिकार करने जा रहे हैं और इस बात से कुछ खिन्न हैं कि उनका छोटा भाई भी उनके साथ आ गया है, जबकि वे दोनों उसे मना कर चुके हैं कि तुम हमारे साथ नहीं चलो। तुम छोटे हो और सुनहरी नदी में गिर जाओगे। मगर छोटे भैया इनकी बात अनसुनी कर इनके साथ आ ही गये हैं। छोटी बहिन राजकुमारी कामनापूर्ति भी राजकुमारों के साथ आना चाहती थी मगर वो कपड़े बदल ही रही थी कि राजकुमार राजमहल से चले आये।

चंद्रचूड़ : **(कुछ खीज के साथ)** छोटे भैया, बहुत छोटे हो। इतने छोटे बच्चे मछली नहीं पकड़ सकते।

छोटे भैया : मगर ये तो बतलाइये पहले कि सुनहरी नदी है कहाँ?

कपिलदेव : यहीं तो है। हम उसी के किनारे तो खड़े हैं।

छोटे भैया : (इधर-उधर देखकर, आश्चर्य से) यही है सुनहरी नदी? मुझे तो दिखलाई नहीं दे रही है।

चंद्रचूड़ : **(खिन्नभाव से)** नदी इसलिए दिखलाई नहीं दे रही है क्योंकि सूत्रधार मंच पर नदी लाना भूल गये हैं। (ताली बजाकर)

कपिलदेव : धीरे बोलो कामनापूर्ति, तुम्हारी आवाज से मछलियाँ डर

कर भाग जायेंगी।

चंद्रचूड़ : मगर तुम यहाँ क्या करने आई हो?

कामनापूर्ति : माताजी ने मुझसे कहा कि आप लोग वहाँ भूखे होगे। उन्होंने आप लोगों का खाना लेकर मुझे यहाँ भेजा है। लेकिन अगर आप लोग चाहते हैं कि मैं यहाँ से चली जाऊँ, तो मैं चली जाती हूँ। (**टोकरी उठाकर वापस चलने को होती है।**)

चंद्रचूड़ : तुम खाना लाई हो तो फिर रुक ही जाओ। थक गई होगी, थोड़ी देर आराम कर लो। हम खाना खा लें। बेचारी थक गई होगी।

कपिलदेव : (**टोकरी लेने के लिए आगे बढ़ता हुआ**) मैं तो खुद ही सोच रहा था। (टोकरी लेकर नीचे रखता हुआ) खाने में से बड़ी महक आ रही है। बड़ा स्वादिष्ट खाना जान पड़ता है।

छोटे भैया : (**टोकरी के निकट आकर, उसे खोल कर देखते हुए**) तो फिर मैं देख ही लूँ, माताजी ने क्या-क्या भेजा है?... ओ हो! बड़े माल हैं!... गोभी के परांवठे, मटर का पुलाव, पापड़, अचार, चटनी, मरब्बे... भाई साहब जल्दी कीजिए, मेरे मुँह में पानी आ रहा है।

चंद्रचूड़ : (**आकर टोकरी के निकट बैठते हुए**) हाँ, अब देर किस बात की है? आओ कपिलदेव, खाना खाओ। किस सोच में पड़े हो?

कपिलदेव : आ रहा हूँ भाई साहब।

टोकरी के निकट बैठ जाता है। तीनों भाई खाना खाने का अभिनय करते हैं। सूत्रधार आगे बढ़ जाता है और दर्शकों को संबोधित कर कहता है।

सूत्रधार : किसी को खाना खाते हुए देखना अच्छा नहीं। खाने वालों को तो संकोच होता ही है। देखने वालों के मुँह में भी पानी आता है। जब तक ये तीनों राजकुमार खाना खाते हैं, मैं आप लोगों को बतला दूँ कि नाटक में आगे क्या होने वाला है। बहुत जल्दी ही एक बूढ़ी औरत यहाँ आयेगी। देखने में वह भिखारिन लगती है। अरे! ये तो खाना खत्म कर चुके हैं। (**तीनों राजकुमार टोकरी एक ओर सरकाकर उठ खड़े होते हैं**) अच्छा मैं चलकर घंटी बजा दूँ ताकि बूढ़ी औरत मंच पर आ जाये और नाटक आगे चले।

सूत्रधार आगे बढ़ घंटी बजा देता है। लाठी टेकती हुई एक बूढ़ी औरत फटे-पुराने कपड़ों में मंच पर धीरे-धीरे प्रवेश करती है। उसने एक लंबा-सा चोगा पहन रखा है जो बहुत पुराना और फटा है। उसमें कई पैबंद भी लगे हुए हैं। वह इधर-उधर देखती है और उस जगह आ जाती है जहाँ पर तीनों राजकुमार खड़े हैं।

बूढ़ी औरत : मैं बहुत थक गयी हूँ... मैं बहुत ज्यादा थक गयी हूँ।

कामनापूर्ति : बूढ़ी अम्माँ, प्रणाम!

बूढ़ी औरत : (**प्रसन्नता के साथ**) प्रणाम बेटी! सुखी रहो। बड़ी हो और बड़ी बनो क्या ये तुम्हारे भाई हैं?

कामनापूर्ति : हाँ बूढ़ी अम्मा (**हाथ से संकेत करती हुई**) ये मेरे सबसे बड़े भाई हैं.... चंद्रचूड़।

चंद्रचूड़ : (**घमंड के साथ**)राजकुमार चंद्रचूड़।

कामनापूर्ति : और ये हैं मझले भैया कपिलदेव, और ये हमारा सबसे छोटा भैया। इसे हम छोटे भैया ही कहते हैं।

बूढ़ी औरत : तुम लोगों से मिलकर बड़ी खुशी हुई। (**टोकरी की ओर**



देखती हुई) अच्छा, इस टोकरी में क्या रखा है? इसमें खाने-पीने की चीजों की महक आ रही है। क्या इसमें कुछ खाने को है?... मुझे भूख लग रही है।

चंद्रचूड़ : इसमें जो कुछ भी था, वह सब खत्म हो गया है। अब इसमें कुछ भी नहीं बचा है।

कामनापूर्ति : मेरे ख्याल से इसमें कुछ गुझियाँ भी रखी हैं। माताजी ने वे खासतौर से तुम लोगों के लिए बनाई हैं। तुम लोगों ने शायद उन्हें खाया नहीं है।

चंद्रचूड़ : (**फुर्ती से**) हम थोड़ी देर में उन्हें भी खा लेंगे। वो हैं कितनी?

कामनापूर्ति : लेकिन भाई साहब, हम दो-एक गुझिया तो बढ़ी अम्मा को दे ही सकते हैं। वो बेचारी बहुत भूखी है न!

चंद्रचूड़ : कैसी बातें कर रही हो कामनापूर्ति? तुम चाहती हो कि हम लोग भूखे रहें?

कामनापूर्ति : (**दृढ़ता के साथ**) ठीक है आप लोग अपने हिस्से की गुझिया खाइये। मैं अपने हिस्से की गुझियां बूढ़ी अम्मां को देती हूं। **टोकरी में से दो गुझियाँ निकाल कर बूढ़ी अम्माँ को देती है।**

बूढ़ी औरत : (**खुशी के साथ गुझियाँ लेती है। बड़े चाव से उन्हें खाती हुई**) जुग-जुग जियो बिटिया। सुखी रहो। भगवान तुम्हें बहुत सारा दे। तुम अच्छी लड़की को। गुझियाँ सचमुच बहुत अच्छी हैं। बहुत ही स्वादिष्ट हैं। इन्हें खाते ही मेरी सारी भूख मिट गयी। मैं कई दिन से भूखी थी।

राजकुमार चंद्रचूड़ को अपनी बहिन का यह भला काम पसंद नहीं आया। वह क्रोध और कुछ विरक्ति के साथ अपना मुँह दूसरी ओर कर लेता है। काँटा हाथ में ले नदी में डाल कर मछली पकड़ने का अभिनय करने लगता

है। उसकी देखा-देखी कपिलदेव और छोटे भैया भी अपने काँटे नदी में डाल मछली पकड़ने का अभिनय करते हैं।

बूढ़ी औरत : बहुत दिनों बाद मैंने इतनी अच्छी तरह कुछ खाया है। मैं तुम्हारे उपकार को कभी नहीं भूल सकूँगी, बेटी।

कामनापूर्ति : आप कैसी बातें कर रही हैं बूढ़ी अम्मा। इसमें उपकार की क्या बात है?

चंद्रचूड़ : (**कुछ क्रोध के साथ**) तुम लोग अपनी बातें बंद नहीं कर सकती कामनापूर्ति? तुम देख नहीं रही हो, हम लोग मछली पकड़ रहे हैं।

बूढ़ी औरत : (**राजकुमारों को अचरज से देख, कामनापूर्ति से**) क्या ये लोग इस नदी में मछलियाँ पकड़ रहे हैं?

कामनापूर्ति : हाँ बूढ़ी अम्मा!

बूढ़ी औरत : (**जोर से हँसती है**) पगले कहीं के । (**फिर हँसती है।**)

छोटे भैया : बूढ़ी अम्माँ, तुम इस तरह क्यों हँस रही हो?

बूढ़ी औरत : (**हँसते हुए**) मेरे बच्चे, ये मछलियाँ नहीं हैं। इस नदी में मछलियाँ हो ही नहीं सकतीं... ये मामूली नदी नहीं है। ये सुनहरी नदी है... इच्छाओं की नदी... कामनाओं की नदी....

छोटे भैया : बूढ़ी अम्माँ, हमारी समझ में तुम्हारी बात नहीं आ रही है।

बूढ़ी औरत : मेरी बात तो सीधी सादी है मेरे बच्चो। मेरा मतलब है कि तुम्हें इस नदी में मछलियाँ पकड़ने की कोशिश करने की बजाय, अपनी इच्छायें, अपनी कामनायें पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए।

चारों बच्चे : (**एक स्वर में**) अपनी इच्छायें पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए।

सूत्रधार !.... नदी... जल्दी लाइये....

सूत्रधार जल्दी से अलमारी की ओर बढ़ता है। अलमारी खोल उसमें से दो बड़ी-बड़ी पट्टियाँ निकालता है। दोनों पट्टियाँ लिपटी हुई हैं। मोटे कपड़े की पट्टी गहरे नीले रंग की है और पतले कपड़े की पट्टी सुनहरे रंग की। शीघ्रता के साथ वह पहले नीले रंग की पट्टी मंच पर बिछाता है और उसके ऊपर सुनहरे रंग की पतली पट्टी।

कपिलदेव : लो छोटे भैया, नदी को अच्छी तरह देख लो। अब ध्यान रखना, कहीं तुम नदी में डुबकी न लगा जाओ।

छोटे भैया : नहीं मंझले भैया, मैं इतना टुइयाँ थोड़े ही हूँ कि नदी में गिर पड़ूँ... **(नदी की ओर देखते हुए)** अच्छा, ये तो बताइये, नदी में मछलियाँ कहाँ हैं? मुझे तो मछलियाँ दिखाई नहीं दे रही हैं।

कपिलदेव : छोटे भैया, नदी का पानी बहुत गहरा है इसलिए मछलियाँ दिखाई नहीं पड़ रही हैं।

चंद्रचूड़ : और मछलियाँ पानी में बहुत नीचे हैं इसलिए तुम्हें दिखाई नहीं पड़ रही हैं।

छोटे भैया : **(नदी की ओर देख, गंभीरता से सोचते हुए)** मेरा ख्याल है कि सूत्रधार नदी में मछली डालना भूल गया है।

सूत्रधार : छोटा भैया ठीक कहता है। मैं अभी नदी में मछलियाँ डालता हूं। **(सूत्रधार जल्दी से अलमारी में से रबर की कुछ रंगबिरंगी मछलियाँ निकालता है और नीली व सुनहरी पट्टी पर इधर उधर डाल देता है।)**

छोटे भैया : **खुशी से तालियाँ बजाते हुए** हाँ, अब मुझे मछलियाँ दिखाई दे रही हैं। ये तो बहुत बड़ी-बड़ी हैं।

चंद्रचूड़ : **(लापरवाही से)**ये तुम्हारे लिए बड़ी हैं। अगर ये तुम्हारे काँटे

में फँस भी जायें तुम इन्हें खींच कर बाहर नहीं निकाल सकते।

कपिलदेव : हाँ, तुम्हारा काँटा भी टूट जायेगा और मछली भी हाथ से निकल जायेगी।

छोटे भैया : आप लोग मुझे इतना टुइयाँ क्यों समझते हैं? मेरे हाथ में काँटा तो आने दीजिए, तब देखिये मैं कितनी बड़ी मछली पकड़ता हूँ।

सूत्रधार तत्काल अलमारी से तीन बंसी और काँटे निकाल कर लाता है और तीनों भाइयों को दे देता है। वे काँटों में चुग्गे फँसा कर बंसी पानी में डालकर मछली पकड़ने का अभिनय करते हैं।

चंद्रचूड़ : (**चीखते हुए**) पकड़ ली। पकड़ ली... । मुझे लगता है, बहुत ही बड़ी मछली है। (**काँटा बाहर निकालता है। (वह बिल्कुल खाली है**) धत् तेरे की!

कपिलदेव : आपने थोड़ी जल्दी कर दी भाईसाहब। इससे मछली निकल भागी!

चंद्रचूड़ : (**काँटा पानी में डालते हुए**) खैर, अब कहाँ जायेगी बच कर। अब तो उसे फँसना ही पड़ेगा।

सूत्रधार : (**दर्शकों से**) कितने अफसोस की बात है कि हमारे अभिनेताओं को मछली मारना भी नहीं आता। ये लोग इतने जोर से बोल रहे हैं। मछलियाँ जरूर इनसे डर कर भाग गयी होंगी।

छोटे भैया : (**जम्हाई लेते हुए**) मुझे तो मछलियाँ मारना एकसा लग रहा है जैसे हम सब मार रहे हों।

छोटे भैया : अब मैं थोड़ी देर आराम करूँगा। मगर सूत्रधार, मुझे तो भूख लग आई है।

चंद्रचूड़ : हाँ सूत्रधार, मुझे भी भूख महसूस होने लगी है। हमारे खाने का इंतजाम करो।

सूत्रधार : (**जल्दी से सूची को ऊपर से नीचे तक देखकर**) नहीं, निर्देशक साहब ने मेरी लिस्ट में आप लोगों का खाना नहीं लिखवाया था। इसलिए मैंने खाने का कोई प्रबंध नहीं किया।

कपिलदेव : अब क्या होगा? हमें तो भूख सताने लगी है।

(**सहसा पृष्ठभूमि से राजकुमारी कामनापूर्ति की आवाज आती है**)... भाई साहब! भाई साहब!

चंद्रचूड़ : अरे, ये तो कामनापूर्ति की आवाज है। ये यहाँ कैसे आ गई?

कपिलदेव : मेरे ख्याल मे ये हमारे पीछे-पीछे आ गई है।

राजकुमारी कामनापूर्ति बायीं ओर से मंच पर प्रवेश करती है। उसके हाथ में एक छोटी टोकरी है जिसे वह बड़ी कठिनाई से उठाये हुए है।

कामनापूर्ति : हूँ! तो आप लोग यहाँ हैं...! मुझे पता था। बताइए, अब तक आपने कितनी मछलियाँ पकड़ी हैं?

बूढ़ी औरत : हाँ बच्ची, भाग्यवान लोग अपने मन में इच्छायें लेकर उन्हें पूरी करने के लिए ही इस नदी पर आते हैं।

कामनापूर्ति : और क्या यहाँ उनकी इच्छायें पूरी हो जाती हैं?

बूढ़ी औरत : हाँ, इच्छाओं को इसी तरह पकड़ना होता है जैसे मछलियों को। और जब एक बार वे पकड़ में आ जाती हैं तो फिर वे पूरी हो जाती हैं।

तीनों बच्चे : अच्छा! हम देखते हैं कि हमारी इच्छा पूरी होती है या नहीं!

तीनों अपनी-अपनी बंसी में चुग्गा लगाकर नदी में डालते हैं। फिर बाहर निकालते हैं। उनमें मछलियाँ फँसी हुई हैं।

बूढ़ी औरत : अब ये मछलियाँ ही बताएंगी कि तुम्हारी इच्छा पूरी होगी या नहीं।

कामनापूर्ति : अब मैं कोशिश करती हूँ। **(वह बंसी नदी में डालती है। जैसे ही मछली फँसकर बाहर निकलती है कि बुढ़िया के फटे कपड़े उतर जाते हैं। वह कीमती चमचमाते कपड़े पहने खड़ी है।)** अरे! मेरी इच्छा तो पूरी हो गयी! सच मैंने यही चाहा था कि बूढ़ी माँ की गरीबी दूर हो जाये।

बूढ़ी औरत : और इन तीनों की इच्छा इसलिए पूरी नहीं हुई क्योंकि सिर्फ अपने लिए माँगा था। प्यारे बच्चो, सदैव इस बात को याद रखो कि किसी चीज की इच्छा सिर्फ अपने लिए नहीं दूसरों के लिए भी करो। दुनिया में कुछ देकर ही तुम पा सकते हो। **(रुककर)** अच्छा! जरा बंसी दो मुझे! मैं भी अपनी इच्छा पूरी करूँ!

बुढ़िया नदी में बंसी डालती है। उसमें फँसकर एक थैली निकलती है जिसमें चार बड़ी-बड़ी चाकलेट हैं।

बूढ़ी औरत : **(खुश होकर)** अरे वाह! मेरी इच्छा पूरी हो गयी। तुम्हें मैं मिठाई खिलाना चाहती हूँ।

थैली खोलकर एक-एक चाकलेट सबको देती है। बच्चे बहुत खुश होते हैं।

सूत्रधार : **(आगे बढ़कर, जनता से)** लीजिए साहब! इन सबको तो मिली चाकलेट! पर मुझे और आपको मिली नसीहत। चलिए अब उम्मीद है कि आप सिर्फ अपने लिए नहीं दूसरों के लिए भी इच्छा करेंगे, **(रुककर)** काश! इस बुढ़िया ने मेरे बारे में भी कुछ सोचा होता! खैर, इस वक्त तो मेरे हाथ लगी है पर्दे की ये रस्सी, इसलिए मैं इसे खींचकर नाटक खत्म करता हूँ।



पात्र

मास्टर जी	:	एक नवयुवक
लल्लू	:	12 वर्षीय बालक
जलेबी	:	10वर्षीय बालिका
टुनटुनी	:	11 वर्षीय बालक
मुनमुन	:	8 वर्षीय बालक
घसीटे	:	12 वर्षीय बालक
तानपूरा	:	11 वर्षीय बालक
हुड़कचुल्लू	:	11 वर्षीय बालक
लुधियाना सिंह	:	13 वर्षीय बालक
प्रिंसिपल	:	एक अधेड़ व्यक्ति

खामोश पढ़ाई जारी है

के.पी. सक्सेना

मंच पर एक पाठशाला का दृश्य है। बैंचों पर 6-7 लड़के-लड़कियाँ बैठे हैं। ब्लैक-बोर्ड के पास कुर्सी पर मास्टर जी उकड़ूँ बैठे ऊँघ रहे हैं। एक बैंच के पास दो छोटे-छोटे पिल्ले बंधे हैं और एक जालीदार पिंजड़े में एक तोता रखा टें-टें चिल्ला रहा है। पीछे एक बैनर लगा है— 'सर्वजन पाठशाला। यहाँ बच्चों पथा पशु-पक्षियों की मुफ्त पढ़ाई होती है!' कक्षा में शोर मच रहा है।

मास्टरजी : **(नींद तोड़कर मेज पर छड़ी फटफटाते हुए)** अरे बच्चों और पशु-पक्षियों चुप रहो! कुछ पढ़ो-लिखो! लल्लू...!

लल्लू : **(उठकर)** जी, मास्टरजी!

मास्टरजी : तुम इन सबमें जरा कम गधे हो! इधर आओ। यहाँ खड़े होकर इन सबको मुहावरे और कहावतें पढ़ाओ। शाबाश! **(पुनः जम्हाई लेकर नींद में नाक बजाने लगते हैं।)**

लल्लू : प्यारे बच्चो, तोतो! शांत हो जाओ। जलेबी, तुम इस चौथी कक्षा में ही चार साल से डेरा डाले बैठी हो।

बताओ, इसका क्या अर्थ होता है— नाच न आये, आँगन टेढ़ा?

जलेबी : मेरी कापी में लिखा है। कापी कल मुर्गी नकल करने ले गयी और चोंच मार कर नोंच डाली। वैसे मैं अर्थ बताती हूँ। इसका अर्थ है कि तूने नाच-नाच कर आँगन टेढ़ा कर दिया है। अब नाचना बंद कर और आँगन सीधा कर।

मास्टरजी : **(नींद में)** शाबाश! शाबाश! खूब मन लगाकर पढ़ो। **(नाक फिर बजने लगती है।)**

लल्लू : शाबाश जलेबी, तुम बैठ जाओ। टुनटुनी, अब तू खड़ा हो। बता, नीम हकीम खतरा जान... इसका क्या मतलब है?

टुनटुनी : **(खड़े होकर)** यह तो बड़ा ही आसान है। इसका मतलब



		है कि ए हकीम, तू नीम के पेड़ के नीचे मत बैठ। तेरी जान को खतरा है।
मास्टरजी	:	**(नींद में छड़ी फटफटा कर)** बहुत अच्छे! ऐसे ही मेहनत से पढ़ो। **(पुनः सो जाते हैं)**
लल्लू	:	मुनमुन, तुम बताओ। नेकी कर, कुएं में डाल।
मुनमुन	:	मुझे कुएं से डर लगता है। नहीं बताऊंगा।
लल्लू	:	अच्छा घसीटे, तू बता।
घसीटे	:	इसका मतलब है कि तू जबरदस्ती सबके साथ नेकी कर। अगर कोई राजी न हो तो उसे कुएं में डाल दे।
लल्लू	:	शाबाश! बैठ जाओ। तानपूरा, तू उठ!

एक बेहद मोटा थुलथुल लड़का उठ खड़ा होता है।





तानपूरा : पूछो! मैं ज्यादा देर खड़ा नहीं रह सकता।

लल्लू : बताओ– घर की मुर्गी, दाल बराबर।

तानपूरा : इसका अर्थ है कि अगर घर में मुर्गी पाली हो तो बराबर दाल खिलाते रहो। नहीं तो अंडा नहीं देगी।

मास्टरजी : **(नींद में)** यह कौन कक्षा में अंडा दे रहा है?

लल्लू : कोई नहीं। आप मजे में सोते रहिए। तानपूरा, तुम बैठ जाओ। हुड़कचुल्लू, तुम खड़े हो जाओ।

हुड़कचुल्लू : **(हकलाता है)** ऊ... ऊ... ऊछो (**पूछो**।)

लल्लू : बताओ, इसका क्या अर्थ है कि जितनी चादर उतने पैर पसार।

हुड़कचुल्लू : अ... अ... आदरें (**चादरें**) नाप लो। जिसकी आदर लंबी हो, उसी में घुसकर पैर पसार दो।

लल्लू : शाबाश! अगर चादर छोटी पड़ जाये तो?

हुड़कचुल्लू : तो क्या? जितने ऐर (**पैर**) आदर के बाहर (**बाहर**) निकले रहें, उन्हें काट कर दूसरी आदर में रख दो, छुट्टी हुई।

मास्टरजी : **(नींद से चौंक कर)** वाह... वाह... शाबाश! हुड़कचुल्लू, मेरा मतलब हुड़कचुल्लू, ऐसे ही मन लगाकर पढ़ो। (**आँखें मूँद लेते हैं... नाक बजने लगती है**।)

लल्लू : बस एक प्रश्न और पूछूँगा। लुधियानासिंह तुम बताओ।

लुधियानासिंह : **(खड़े होकर)** पुच्छो जी! अस्सी तय्यार हैं।

लल्लू : बताओ, पाँच जनों की लाठी, एक जने का बोझ।

लुधियानासिंह : लो सुनो! पाँच आदमी मिलकर एक आदमी को लाठी मारो। जब बेहोश हो जाये तो उसका बोझ लाठी पर टाँग

कर उसके घर पहुँचा दो। होर पुच्छो!

सब बच्चे ताली बजाते हैं... हँसते हैं... पिल्ले भौंक रहे हैं... तोता चीखता है... गुस्से में प्रिंसिपल का प्रवेश।

प्रिंसिपल : **(जम्हाई लेकर डाँटते हुए)** मास्टरजी, आप खुद मजे में सो रहे हैं और दूसरे की नींद का कोई ध्यान नहीं? इतना शोर मच रहा है कि मुझे नींद ही नहीं आ रही है। बहुत गलत बात है।

मास्टरजी : **(अंगड़ाई लेकर खड़े होते हुए)** क्षमा करें। अब शोर नहीं



होगा, आप जाकर सोइए।

प्रिंसिपल गुस्से में चले जाते हैं।

मास्टरजी : प्यारे बच्चो, तोतो! तुम्हें ध्यान रखना चाहिए कि प्रिंसिपल साहब सो रहे हैं। चुपचाप पढ़ो। जिसे शोर मचाना हो, वह मुँह बंद करके शोर मचाये ताकि आवाज न हो। शाबाश!

मास्टरजी पुन: आँखें मूँदकर नाक बजाने लगते हैं। बच्चे ठहाका मारकर हँसते हैं। पर्दा बंद होता है।





जुपिटर ऑफसेट वर्क्स, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित



रु. 13.00 ISBN 81-237-0946-3

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

एकः सूते सकलम्